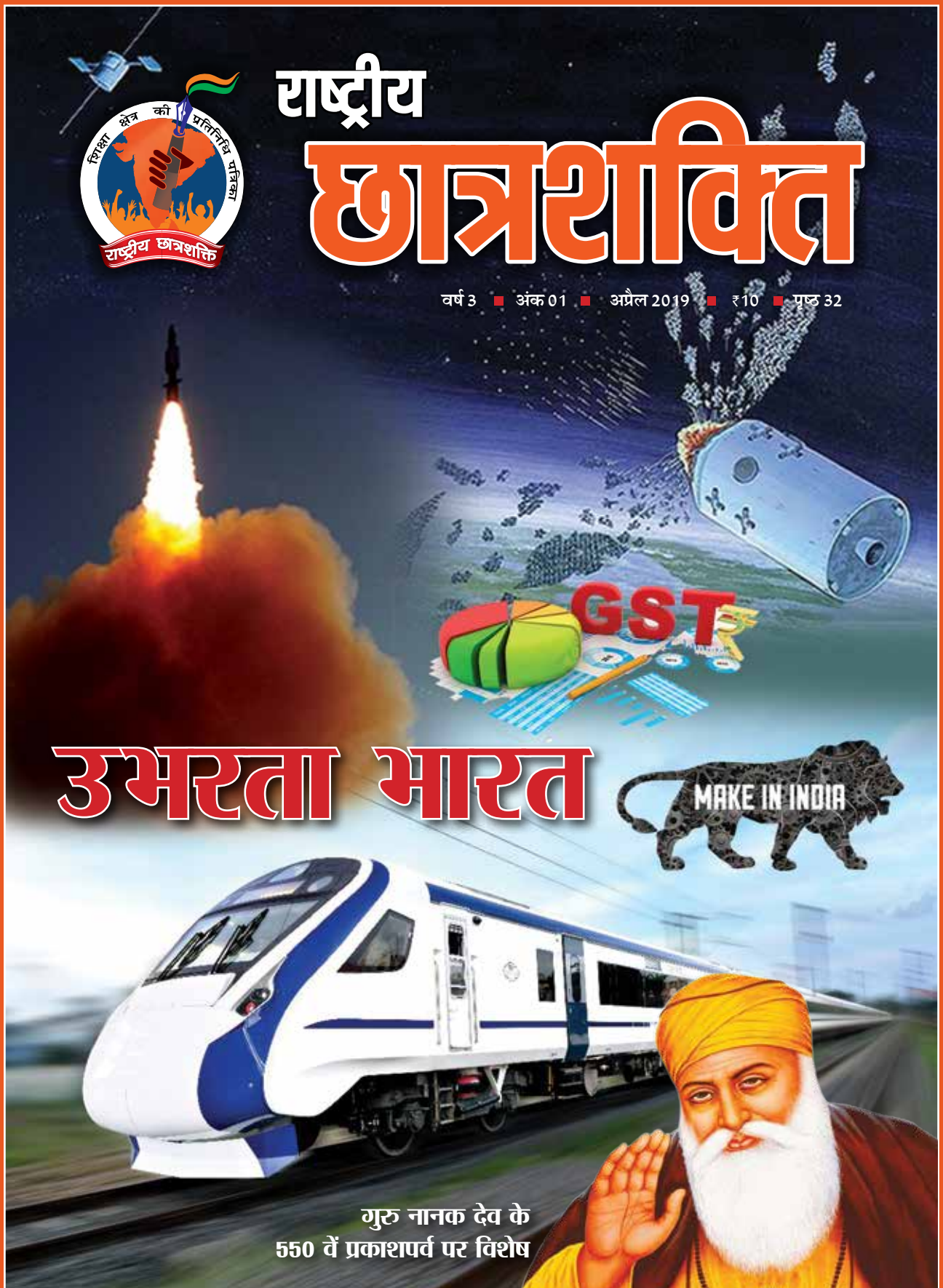

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 3 ■ अंक 01 ■ अप्रैल 2019 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 32

उभरता भारत

गुरु नानक देव के
550 वें प्रकाशपर्व पर विशेष

परिषद् गतिविधियां

नांदेड़ में अभाविप, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित डिपेक्स महोत्सव को संबोधित करते अभाविप के राष्ट्रीय सह – संगठन मंत्री जी. लक्ष्मण एवं मंचासीन अतिथि

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा में 'शोध (स्टूडेंट फॉर हालिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ ह्यूमनिटी)' प्रकल्प द्वारा आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर, सभा में मौजूद हैं देश भर से आये शोधार्थी व शिक्षाविद

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 3, अंक 01
अप्रैल, 2019

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 उभरता भारत

जब हम भारत के गौरव की बात करते हैं, तो स्वाभाविक ही हमारा मनुष्य स्वभाव व आदतें हमें भारत के प्राचीन इतिहास की ओर ले जाती हैं।और ऐसा क्यों न हो, क्योंकि इस भारतवर्ष ...

संपादकीय	04
'उभरता भारत – नई आशाएं' विषय पर देश भर में संगोष्ठी का आयोजन	10
मध्यकालीन दशगुरु परम्परा के उन्नायक श्री नानक देव जी का चिन्तन व विरासत	11
शोध के बहाने भारतीय जनमानस को बरगलाने का हुआ प्रयोग : एन. के. तनेजा	15
बलिदान दिवस : भगत, सुखदेव, राजगुरु को अभाविप ने किया याद	16
HOW MODI GOVT MADE THE FOURTH AND FIFTH FRONTIERS SAFE WITH ANTI–SATELLITE TEST	17
मेडिविजन की तीन दिवसीय कार्यशाला रोहतक में संपन्न	18
छात्रों की रचनात्मता को निखारने का मंच है डिपेक्स : जी. लक्ष्मण	19
जलियांवाला बाग हत्याकांड के सौ वर्ष	20
नेशन फर्स्ट–वोटिंग मस्ट : चौहान	23
संचार–संस्कृति में संतुलन का यक्षप्रश्न	24
पूर्व रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर को अभाविप ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि	25
राष्ट्रीय चिंतन के साम्प्रतिक व्याख्याकार डा. हेडगेवार	26
प्रेरक पर्रिकर	28
क्या मतदान अनिवार्य होना चाहिए?	29

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक और उपलब्धि हासिल की। ऑपरेशन शक्ति की सफलता के साथ भारत विश्व की चौथी शक्ति बन गया जिसके पास अंतरिक्ष में तीव्र गति से परिक्रमा कर रहे कृत्रिम उपग्रह पर सटीक निशाना साध नष्ट करने की क्षमता है।

रक्षा अनुसंधान विकास संगठन के वैज्ञानिकों की लगन और अथक मेहनत से ही भारत को यह स्थान मिला है। यह विभाग सच में अभिनन्दन का अधिकारी है क्योंकि तमाम अड़चनों और संसाधन के अभाव के बावजूद इसके वैज्ञानिक निरंतर शोध में लगे रहे और अनुकूल अवसर मिलने पर उपलब्धियों के कीर्तिमान स्थापित किये। प्रधानमंत्री मोदी को निस्संदेह इसका श्रेय जायेगा क्योंकि यह विभाग उनके पास है और वैज्ञानिकों को उपयुक्त माहौल और प्रोत्साहन देने के साथ ही संसाधनों की कमी भी महसूस नहीं होने दी।

विपक्षी दलों द्वारा इस उल्लेखनीय उपलब्धि को सवालों के घेरे में लाने की कोशिश की गयी। इसे चुनावी लाभ हासिल करने का हथकंडा बताया गया। यह विपक्ष के उस निन्दा अभियान का ही विस्तार था जिसके आधार पर वह चुनावी वैतरणी पार करने की जुगत में है। लेकिन इन तिकड़मों के चलते भारतीय राजनीति अभी तक के निम्नतम स्तर पर जा टिकी है जहां स्वस्थ आलोचना के लिये कोई स्थान नहीं है। राजनैतिक मतभेद वैचारिक भिन्नता से परे जाकर रंजिश जैसी स्थिति में जा पहुंचे हैं जिसमें सत्ता पक्ष को घेरने के लिये राष्ट्रवाद को भी निशाने पर लिया जा सकता है।

यह कांग्रेस अध्यक्ष के रणनीतिकारों की चूक भी हो सकती है और भारत के बारे में बुनियादी समझ का अभाव भी, कि राष्ट्रीयता और संस्कृति के मुद्दों पर भारतीय समाज की संवेदनशीलता को नजरअंदाज करते हुए वे भारत और भारतीयता के विरोध में जा खड़े हुए हैं। यह उस पाले में जाकर खेलने का दुस्साहस है जिसकी विजेता दशकों से भाजपा है। कांग्रेस और उसके सहयोगियों का यह प्रयास उन लोगों को भी भाजपा के पक्ष में खड़ा होने के लिये विवश करेगा जो सामान्य रूप से तटस्थ हैं। हो सकता है कि वे मोदी समर्थक न भी हों लेकिन राष्ट्रीयता को प्राथमिकता देने के कारण वे किसी भी स्थिति में वर्तमान संप्रग के साथ अपनी पहचान जोड़ने के लिये तैयार नहीं होंगे। निस्संदेह यह राजनैतिक हाराकिरी की कोशिश है जिसकी पुष्टि चुनाव परिणाम के आने पर हो जायेगी।

देश सिख गुरुओं में प्रथम गुरु नानक देव का 550वां वर्ष मना रहा है। जलियांवाला बाग के नृशंस हत्याकांड की शताब्दी और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150 वर्ष के समारोह देश को एक सूत्र में बांधने के प्रयासों को मजबूत करेंगे। यह सब मिल कर देश में राष्ट्रवाद का एक ज्वार हिलोरें ले रहा है। अंतरिक्ष में वैज्ञानिक उपलब्धियों और पाकिस्तान में घुस कर आतंकी ठिकानों को नष्ट करने की घटनाओं ने देश को गौरव से भर दिया है। आंखों पर नफरत की पट्टी बांधे राजनेता भले ही इसे देख न पा रहे हों, लेकिन देश सब कुछ देख रहा है। हो सकता है वह इस पर मुखर न हो, लेकिन मतदान के समय उसका मौन किस रूप में प्रकट होगा, यह आने वाला समय ही बतायेगा।

राष्ट्रनिर्माण में सभी पक्षों का योगदान रहा है। सात दशकों की स्वतंत्र भारत की यात्रा में नकारात्मक शक्तियों का भी योगदान स्वीकारणीय है जिनके द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों ने राष्ट्रीयता के आराधकों को कभी शिथिल नहीं पड़ने दिया। इसी निरंतरता के कारण सभी कठिनाइयों को पार कर राष्ट्रीयता का यह प्रवाह आज देश की मुख्यधारा बना है और पूरा विश्व इसे स्वीकार कर रहा है। भारत माता की जय और वन्दे मातरम् नारे नहीं मंत्र हैं जिनकी ऊर्जा से आज नहीं तो कल, सभी आप्लावित होंगे। सब को अपना बना लेने की विशिष्ट जीवनशैली का नाम ही भारतीय राष्ट्रीयता है।

भारतीय नववर्ष विक्रम संवत 2076 की हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका

संपादक

उभरता भारत

चेतस सुखाड़िया

जब हम भारत के गौरव की बात करते हैं, तो स्वाभाविक ही हमारा मनुष्य स्वभाव व आदतें हमें भारत के प्राचीन इतिहास की ओर ले जाती हैं।और ऐसा क्यों न हो, क्योंकि इस भारतवर्ष की बात ही कुछ ऐसी है। जहां एक ओर विश्व की अन्य संस्कृतियां समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती गयीं, वहीं दूसरी ओर भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर - अमर बनी हुई है। भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि हजारों वर्षों के बाद भी यह अपने मूल स्वरूप में जीवित है।हजारों उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि धर्म, दर्शन, विज्ञान, वास्तु, ज्योतिष, खगोल शास्त्र,स्थापत्य कला, नृत्य कला, संगीत कला आदि सभी तरह के ज्ञान का जन्म भारत में हुआ।मध्यकाल में भारतीय गौरव को नष्ट करने का प्रयास योजनापूर्वक किया गया, अतः तथाकथित भारतीय समाज पश्चिमी सभ्यता को महान समझने लगा, यह हमारा दुर्भाग्य है।

भारत में प्राचीन काल से ही ज्ञान को बड़ा महत्व दिया गया – कला, विज्ञान, गणित सहित अनगिनत क्षेत्रों में भारत का योगदान अनुपम है।इसलिये आज भी जब आधुनिक युग में जो नये-नये आविष्कार दुनिया में होते रहते है, उनके मूल में प्रायः प्राचीन भारतीय शोध संदर्भों की छाया भी परिलक्षित होती है।ऐसे ही विश्व को विश्वविद्यालयों की कल्पना देने वाला यह भारत ही है।विश्व के सबसे पहले विश्वविद्यालय तक्षशिला और नालंदा ज्ञान के क्षेत्र में भारत के गौरव समान थे।जब हम प्राचीन भारत के गौरव या स्वाभिमान की बात करते है तो पाते हैं कि इस भूमि की भाषा - संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है, बौधायन के प्राचीन गणित सूत्र भारत की विश्व को देन हैं।शून्य का आविष्कार यहां पर हुआ, आयुर्वेद और योग शास्त्र भारत में विकसित हुए, शल्य चिकित्सा महर्षि सुश्रुत की विश्व को देन है।खगोल विज्ञान संपूर्ण दुनिया को देने का श्रेय भास्कराचार्य को जाता है। आज भी विमान के आविष्कार के बारे में विदेशियों को श्रेय दिया जाता है लेकिन उनसे हजारों वर्ष पूर्व इस धरती पर ऋषि भारद्वाज ने विमानशास्त्र लिखा था।यदि आधुनिक काल की बात करें तो हमें ध्यान में आता है कि रेडियो के आविष्कार का श्रेय जी. माकोर्नी को दिया जाता है लेकिन यहाँ यह बात भी ध्यान रखने की है कि जिस जी. मार्कोनी

को रेडियो के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है उसके मूल में मार्कोनी के पुस्तकालय से प्राप्त प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु की वह डायरी है जिसमें उन्होंने रेडियो की संरचना पहले से ही डिजाईन कर रखी थी।समय के साथ दुनिया विकसित होती गयी और धीरे-धीरे कम्प्यूटर का युग भी आ गया।हमने दुनिया से कम्प्यूटर मांगा लेकिन दुनिया ने हमें नहीं दिया, इसी भारत के वैज्ञानिकों ने समय जाते विश्व का सर्वोत्तम परम कम्प्यूटर विकसित करके दिखाया।

आज दुनिया 21 वीं शताब्दी में अग्रसर हो चुकी है और साथ - साथ भारत भी उस पैमाने पर दुनिया के अन्यान्य विकसित राष्ट्रों के साथ कदमताल मिलाते हुए आगे निकल रहा है।जिस भारत का वैश्विक महासत्ताओं में कोई स्थान नहीं था, वर्तमान में वह दुनिया में अपने प्राचीन गौरव और वर्तमान आत्मसम्मान के साथ खड़ा हुआ है।विगत दिनों भारत ने समूचे विश्व में अपना एक सम्मानजनक स्थान बनाया है उससे हर भारतीय गौरव का अनुभव करता है।आज विश्व में भारत ने विकास के नये कीर्तिमान स्थापित किये है, साथ ही सामरिक दृष्टि से लेकर आधारभूत संरचना, रेलवे, प्रोद्यौगिकी, खेती, अंतरिक्ष विज्ञान, खेल, अर्थतंत्र के क्षेत्र में अपनी नयी पहचान के साथ खड़ा हुआ है।इक्कीसवीं शताब्दी के भारत ने अपने मूलभूत जीवन मूल्यों व संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए विश्व में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं।दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में आजादी के 70 साल बाद का यह बदलाव अपने आप में उभरते व बदलते हुए भारत की तस्वीर प्रस्तुत करता है।विश्व गगन में भारत का विजय ध्वज फहराने जहाँ एक ओर भारत का युवा कटिबद्ध बना है वहीं दूसरी ओर देश का नेतृत्व, शासन, प्रशासन की सकारात्मक सोच के साथ - साथ देश के जनतंत्र की इच्छाशक्ति ने भी देश को आगे बढ़ने व बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया है।तभी तो आज समूचा भारत अपने स्वाभिमान के साथ दुनिया की आंखों में आंख डालकर खड़ा हुआ प्रतीत होता है। आइये हम भी कुछ उदाहरणों से इस बात को समझने का प्रयास करें।

बढ़ती हुई सामरिक शक्ति

पिछले दिनों भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दुश्मन देशों की ओर चेतावनी देते हुए यह घोषणा करना कि भारत का अश्वमेध यज्ञ पूरा हो चुका है - यह दर्शाता है कि जब भारत द्वारा हाल ही में विकसित आई.एन.एस अरिहंत भारतीय अंतरराष्ट्रीय जल सीमा का परिभ्रमण कर भारतीय जल सीमा में वापस लौटी तो देश की अंतरराष्ट्रीय जल सीमा की सुरक्षा के लिये अत्यंत आधुनिक मानी जाने वाली इस सबमरीन की क्षमता पर हमें गर्व महसूस हुआ।पहली बार भारत के इतिहास में अपने परमाणु हथियारों को लादकर और समय आने पर समुद्र के भीतर से ही दुश्मन पर परमाणु हमला कर सकने वाली सबमरीन के विकास के माध्यम से भारत ने अपने समुद्री सुरक्षातंत्र को और अधिक सुदृढ़ बना लिया है।वहीं दूसरी ओर मेक इन इण्डिया के तहत भारतीय कंपनी व भारत के ही इन्जीनियरों द्वारा विकसित के-9 जैसी तोप जिसकी मारक क्षमता अमेरिकी तोप 777 से बराबरी कर सकती है।इसे भी आधुनिक शस्त्र उत्पादन में भारत की बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इकत्तीस साल पहले भारतीय सेना को दिये गये बोफर्स तोप के बाद सशस्त्र सेनाओं का आधुनिकीकरण करते हुए पहली बार ऐसे घरेलू शस्त्र का निर्माण किया गया।पिछले लगभग चार सालों में भारत ने ऐसे अनेक प्रकार के अत्याधुनिक शस्त्र विकसित किये है।पहले हम विकसित राष्ट्रों से गोला - बारूद माँगते थे आज उस स्थिति में परिवर्तन आया है और अमेरिका जैसे देश भी हमारे द्वारा निर्मित गोला - बारूद खरीदने को तत्पर हैं।90 के दशक में सीमा पर तैनात हमारे जवानों को भारतीय बनावट की स्वदेशी इनसास राइफल्स से लैस किया गया था जिसकी खराबी के कारण नयी आधुनिक राइफल्स की तलाश करते हुए भारतीय रक्षा मंत्रालय ने पिछले 20 साल की रक्षा सौदे की सबसे बड़ी डील करते हुए हजारों की संख्या में एसॉल्ट राइफल्स खरीदने की मंजूरी दे दी है और सबसे बड़ी बात यह है कि सबसे पहले भारत - चीन सीमा पर तैनात हमारे सैनिकों को उससे लैस किया जा रहा है।

भारतीय रेलवे व यातायात क्रांति

पहले कहा जाता था कि जिस गति से विदेशों में ट्रेन चलती है उस गति से तो हमारे यहाँ विमान भी नहीं चलते।लेकिन आज भारत ने पिछले कुछ समय में यातायात के क्षेत्र में और विशेष कर जब रेलवे के क्षेत्र में अनेक सिद्धि हासिल की, तो हमें लगता है कि आज का भारत विश्व की उस गति - मर्यादा से भी स्पर्धा करेगा।ऐसा ही कुछ भाव मन में आया जब पिछले दिनों मेक इन इण्डिया के माध्यम से बनायी गयी, भारत की पहली इंजिन रहित ट्रेन राष्ट्र को समर्पित की गयी।अब तक की भारत की सबसे तेज गति से दौड़ने वाली ट्रेन की गति शताब्दी को भी मात देकर 180 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली Train -18 का पटरी पर दौड़ना शुरू हो चुका है।सबसे विशेष बात यह है कि भारत

की सरकार ने इस ट्रेन का नाम 'वंदे भारत एक्सप्रेस' रखा है।पहले हम बांग्लादेश, म्यान्मार, पाकिस्तान जैसे देशों को ट्रेन एक्सपोर्ट करते थे, आज हमने एक ओर ऑस्ट्रेलिया जैसे देश को 22 ट्रेनें निर्यात की हैं तो वहीं श्रीलंका को हमने स्टेनलैस स्टील बनावट की डेमू ट्रेन पिछले दिनों निर्यात की है।आने वाले दिनों में देश में बुलेट ट्रेन चलने की बात हो रही है, वहीं बीच में भारत सरकार ने घोषणा की है कि वह मेक इन इण्डिया के तहत जापान के सहयोग से बुलेट ट्रेन के कोच भी बनायेगा और विश्व के साथ उसका व्यापार भी करेगा।

जब यातायात संसाधन के विकास की बात आती है, तो उसके लिये आवश्यक अत्याधुनिक व्यवस्थाएँ खड़ी होना भी उतना ही आवश्यक माना जाता है।भारत ने पिछले दिनों उस क्षेत्र में भी बड़ी सिद्धि हासिल की है।जहाँ एक ओर जम्मू - कश्मीर की चिनाब नदी के ऊपर चीन के बाद कुतुब मीनार से भी पाँच गुना ऊंचा विश्व का सबसे बड़ा रेलवे ब्रिज बनने जा रहा है, वहीं दूसरी ओर देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपर अत्यंत आधुनिक वेल्डिंग टेक्नोलॉजी की मदद से देश का पहला और एशिया का दूसरे नंबर का रेल - सड़क सेतु बोगीबील ब्रिज आज बनकर तैयार है जिसके माध्यम से असम और अरूणाचल की दूरी कम हुई है, इस सेतु की सबसे विशेष बात यह है कि इसकी कुल अनुमानित आयु सीमा 120 साल बतायी गयी है।

आधारभूत संरचना विकास में नये कीर्तिमान

समय के बदलाव के साथ व्यवस्थाओं में भी बदलाव आता है, पर जब व्यवस्थायें काल सुसंगत हों तो उसका महत्व और भी बढ़ जाता है - पश्चिम बंगाल के हल्दिया से उत्तर प्रदेश के वाराणसी तक गंगा नदी में गुड्स ट्रान्सपोर्ट हेतु जलमार्ग का निर्माण उसी का उदाहरण है।प्रबल इच्छाशक्ति के कारण नदी मार्ग से गुड्स ट्रान्सपोर्ट का यह प्रॉजेक्ट 38 साल के कालखंड़ के बाद वास्तविक स्वरूप ले सका।उसी क्रम में प्रयागराज से वाराणसी के बीच गंगा नदी में क्रूज सर्विस का प्रारंभ भी भारत की नयी विशेषता है।गुजरात के बड़ौदा में देश का पहला व विश्व का तीसरा रेलवे विश्वविद्यालय निश्चित ही युवाओं के लिये नये रोजगार का सृजन लेकर आया है।आज आजादी के सत्तर साल बाद देश के हर गाँव का विद्युतीकरण संभव हुआ है।देश में उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है।वहीं जगत पिता किसान की खेती के लिये आवश्यक मूलभूत संरचनाओं में सुधार के लिये लगातार प्रयास किये जा रहे हैं।

अंतरिक्ष में बढ़ती ताकत

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में आज भारत ने अपना नाम ऊंचा किया है, जिस प्रकार से भारत ने पिछले दिनों "मिशन शक्ति" के माध्यम से अंतरिक्ष में सेटेलाइटरोधी मिसाइल का सफल परीक्षण कर अपनी क्षमता के साथ विश्व के प्रथम चार देशों की सूची में शामिल हुआ है उससे विज्ञान के विद्यार्थी से लेकर सामान्य भारतीय नागरिक तक अपने देश की इस उपलब्धि पर गर्व अनुभव करते हैं।किंतु यह पहला अवसर नहीं था - अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में जिस गति से भारत ने पिछले कुछ ही दिनों में जिस प्रकार से सफलता प्राप्त की है उससे दुनिया चकित है।15 फरवरी और 23 जून 2017 को इसरो द्वारा क्रमशः एक साथ 104 और 31 सेटेलाईट का अंतरिक्ष में प्रक्षेपण किया गया और उसमें से ज्यादातर उपग्रह विदेशों के थे।विदेशों में प्रक्षेपण में आने वाली लागत से कम लागत भारत में आने के कारण अमेरिका, इंलैण्ड, फ्रांस जैसे देश भी इसरो के माध्यम से अपने उपग्रह प्रक्षेपण करवाने भारत के पास आते हैं, दुनिया के ऐसे विकसित राष्ट्रों का भारत के पास आना और भारत के वैज्ञानिकों के ऊपर भरोसा व्यक्त करना, यह उससे भी बड़ी उपलब्धि जो हमारी गुणवत्ता को सत्यापित करती है।पिछले नवम्बर माह में जी-सैट 29 श्रेणी का अब तक का भारत का सबसे भारी उपग्रह जिसका कुल वजन 3423 कि.ग्रा था, जो चंद्रयान-2 व मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन के लिये अहम माना जाता है, उसका भी सफल प्रक्षेपण इसरो की बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा जाता है।वहीं भारत के छात्रों द्वारा बनाये गये सबसे हल्के उपग्रह कलाम सैट-2 को भी अंतरिक्ष में प्रस्थापित करने का श्रेय इसरो को जाता है।इसी क्षेत्र की एक बड़ी दिलचस्प घटना पिछले दिनों घटित हुई, जब 15 नवम्बर, 2018 के दिन इन्टरनेट के ऊपर स्टेच्यु ऑफ यूनिटी का सेटेलाईट चित्र बड़ी तेजी के साथ प्रसारित हुआ, दुनिया में ऐसी बहुत कम चीजे हैं जो जैसी है वैसी अंतरिक्ष में से दिखती हैं। अमेरिका की स्कायलैब नाम की कंपनी के सेटेलाईट ने स्टेच्यु ऑफ यूनिटी का चित्र अंतरिक्ष से लिया पर भारत के लिये गर्व का क्षण वह था कि अमेरिका की जिस कंपनी के उपग्रह ने यह चित्र अंतरिक्ष से लिया, उस उपग्रह का प्रक्षेपण भारत की इसरो नाम की संस्था के माध्यम से हुआ था।

अर्थतंत्र में प्रगति

नोटबंदी और जी.एस.टी के बाद देश के विपक्ष का अतार्किक शोर-गुल तो हमने सुना ही था, और देश के कुछ

तथाकथित लोग भ्रमित होते हुए भी दिखे।पर आज जब भारत के अर्थतंत्र की बात निकल कर आती है, तो ध्यान में आता है कि जिस देश ने भारत को लंबे कालखंड तक गुलाम रखा, आज उसी ब्रिटेन की इकोनॉमी को पछाड़कर भारत की इकोनॉमी आगे बढ़ रही है। वहीं लगातार देश का सकल घरेलू उत्पादन (GDP) भी आगे बढ़ रहा है।28 साल बाद आज ऐसा पहला अवसर है जब भारत चीन के जीडीपी को पछाड़ रहा है।विशेषज्ञों की मानें तो इसी साल भारत विश्व की पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है।एक वैश्विक सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2019 से लेकर 2035 तक याने आने वाले 17 सालों में दुनिया में तेजी से आर्थिक विकास करने वाले शहरों की सूची में भारत के 17 शहर माने जा रहे हैं, सबसे दिलचस्प बात यह है कि पहले दस क्रम में आने वाले सभी शहर भारत के हैं।

महिलाओं का योगदान

कोई भी देश जब प्रगति करता है, या कहें विकास की ओर बढ़ता है तो उसका श्रेय केवल देश की सरकार या शासन को नहीं जाना चाहिए।जब देश आगे बढ़ता है, तो उसमें उस देश के जनतंत्र का भी बड़ा योगदान रहता है।और जब जनतंत्र की बात होती है, तो महिलाओं का योगदान भी भारत के विकास में कम नहीं आँका जा सकता।एक तरफ भारत की इकॉनोमी चलाने में महिला सहभाग की बात आती है, तो वहीं आज खेल, कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और राजनैतिक क्षेत्र में भी महिलाओं ने भारत की साख बढ़ायी है। भारतीय महिला क्रिकेट टीम का नेतृत्व करने वाली मिताली राज से लेकर अंतरराष्ट्रीय तथा एशिया व ओलम्पिक खेलों में भारत की ओर से खेलने वाली - मेरी कॉम, सायना नेहवाल, दीपा कर्माकर, हिमा दास, पी.वी सिंधु जैसी प्रतिभाओं ने इस क्षेत्र में भारत का नाम रोशन किया है।राजनैतिक क्षेत्र में भी देश की लोकसभा स्पीकर, विदेश मंत्री व रक्षामंत्री जैसे पदों को महिलाएँ अपना सक्षम व सफल नेतृत्व दे रही हैं।पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के कठबा नाम के गाँव से आई.पी.एस उत्तीर्ण होने वाली 29 साल की शालिनी अग्निहोत्री ने आई.पी.एस की सर्वश्रेष्ठ ट्रेनी का खिताब अपने नाम कर लिया।वहीं राजस्थान की खुश्बू कंवर ने 70 वें गणतंत्र दिवस को राजपथ पर असम राईफल्स का नेतृत्व कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।"नारी तू नारायणी" इस देश के विचार को आज एक प्रकार से सम्मान तब मिला जब 'नारी शक्ति' शब्द को 2018 का 'वर्ड ऑफ दी इयर' चुना गया और उसे ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भी स्थान मिला।

वैश्विक स्तर पर भारत की स्वीकार्यता

इक्कीसवीं सदीं का भारत उभरता हुआ भारत है, यह बदलता हुआ भारत है, हमारा यह विश्वास होना चाहिये कि निश्चित ही आनेवाला समय भारत के भाग्योदय का समय है।भारत हर क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करेगा।भारत का जो मूल विचार है, वह सबके सुख की कामना का है, विश्व के कल्याण का है, इसी कारण जब भारत ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता देने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्रसंघ में रखा, तो प्रायः विश्व के सभी देशों ने उसको एक स्वर में मान्यता दी।आज भारत के शीर्ष नेतृत्व ने जिस प्रकार से दुनिया के विभिन्न देशों के साथ संबध विकसित कर भारत की मूल भावना से सबको परिचित कराया व अपना शुभचिंतक बनाया उसका अनुभव हमें अनेक बार हुआ है।पिछले दिनों पुलवामा आतंकी हमले के विरूद्ध पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर एयरस्ट्राईक के समय जब विश्व के सारे देश भारत के पक्ष में खड़े हुए दिखाई दिये और आतंकवाद का पोषक पाकिस्तान दुनिया में अलग-थलग पड़ गया, तब हमें इस बात का अनुभव हुआ कि भारत के प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं ने क्या परिणाम लाया है।ऐसे ही संयुक्त राष्ट्रसंघ की मानव अधिकार समिति के सदस्य के रूप में भारत की दावेदारी के समय आवश्यक 97 देशों के समर्थन के सामने अपने मताधिकार रखने वाले 199 देशों में से 188 देशों ने भारत के पक्ष में अपना मतदान किया, वह भी भारत के लिये एक ऐतिहासिक गौरव का दिन था।वहीं संयुक्त राष्ट्रसंघ के कानून आयोग में सर्वाधिक 160 देशों का समर्थन प्राप्त करने वाला देश भारत बन पाया है।

एडेलमैन ट्रस्ट की एक रिर्पोट के अनुसार दुनिया के विभिन्न देशों के 27 क्षेत्रों का सर्वे किया गया जिसमें से सरकारी कामकाज, गैर सरकारी कामकाज, मीडिया की विश्वसनीयता और बढ़ते कारोबार जैसे क्षेत्रों में विश्व के सबसे विश्वसनीय देशों की सूची में भारत का स्थान अव्वल आया है।यह अपने देश का स्वाभिमान बढ़ाने वाली रिर्पोट है।

भावनात्मक स्तर पर उभरता भारत

भारत की सनातन संस्कृति का सबसे बड़ा आयोजन कुंभ, इसे युनेस्को ने भी विश्व के सबसे बड़े धार्मिक एवं मानवीय आयोजन के रूप में मान्यता दी है।इस कुंभ मेले में आने वाले साधु-संत, अखाड़े आदि आकर्षण के केन्द्र रहते हैं।यह

भारत की ही सनातन संस्कृति है कि ऐसी संन्यस्त परंपरा के आगे समस्त संसार नतमस्तक होता है।पहले लोग भारत को चरवाहों, सपेरों का देश कहते थे, भारत की संन्यास परंपरा का मजाक उड़ाया जाता था।आज टेक्नोलोजी के आधुनिक युग में भी इस देश की सनातन संन्यास परंपरा विद्यमान है और हजारों लोग अपने जीवन का मूल ध्येय पाने, सत्य की खोज व परात्मा के साक्षात्कार के लिये संन्यास धारण करते हैं।उसी श्रृंखला में आज दीक्षा ग्रहण करने वाले विभिन्न धार्मिक संगठनों से लेकर अखाड़ों में उच्च शिक्षा प्राप्त ऐसे डॉक्टर,अधिवक्ता, प्राध्यापक, वैज्ञानिक से लेकर विविध ज्ञान शाखाओं के विशिष्ट विद्वान भी है।

इस साल प्रयागराज में कुंभ मेले के प्रारंभ में विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के राजदूतों को अपने देश के राष्ट्रध्वज के साथ निमंत्रित किया गया, सत्तर देशों के राजदूतों के आने के समय भले ही पाकिस्तान और चीन के राजदूत नहीं आये।पर 14 जनवरी को कुंभ के पहले स्नान के समय गूगल सर्च इंजन के माध्यम से कुंभ व उससे संबधित जानकारी करोड़ों की संख्या में सर्च हुई, पाकिस्तान, चीन सहित संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, मलेशिया, नीदरलैण्ड, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस जर्मनी इटली, ब्राजील जैसे देशों के लाखों लोगों ने इन्टरनेट सर्चिंग के माध्यम से कुंभ में ई-डुबकी लगाने का प्रयास किया।सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि जिन दो देश के राजदूत अपना राष्ट्रध्वज लेकर नहीं आये, ऐसे पाकिस्तान और चीन में सबसे अधिक संख्या में सर्चिंग की गयी।

पिछले दो दशक से कश्मीर का आतंकवाद चरम पर है, सेना पर पत्थर फेंके जाते है।उसी कश्मीर के अंदर रहने वाली महज 25 वर्षीय - इशरत सुनीर नामक लड़की का ख्वाब था कि जन्नत ए कश्मीर आतंकवाद मुक्त हो, पाकिस्तान - प्रेरित आतंक का सफाया हो।अपनी प्रबल देशभक्ति व आतंक के सफाया करने की इच्छाशक्ति रखने वाली देश की इस बेटी द्वारा भारतीय सेना को हिजबुल मुजाहीद्दीन के ठिकानों की जानकारी देने के कारण 15 आतंकियों को ढेर करने में भारतीय सेना सफल रही।पिछले 31 जनवरी, 2018 को इशरत का आतंकियों के द्वारा अपहरण हुआ और उसको मौत के घाट उतार दिया गया।इशरत का सपना था कि कश्मीर आतंकवाद मुक्त हो, आज 90 के दशक के बाद सरकार की इच्छाशक्ति व सेना के मनोबल के कारण जम्मू - कश्मीर का बारामुला जिला आतंकवाद मुक्त घोषित हो चुका है, यही इशरत को सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती थी।

आने वाले दिनों में हम पूज्य महात्मा गांधी की सार्धशती मनाने जा रहे हैं।आसानी से गांधी के नाम पर वोट बटोरने वाले व राजनीति करने वालों ने गांधी जी के उस हिंदस्वराज के सपने को साकार करने में न कभी दिलचस्पी दिखायी न ही किसी ने उन्हें समझने का प्रयास किया।गांधीजी के जीवन में स्वच्छता विशेष आग्रह का विषय था, आज महात्मा गांधी का वह स्वच्छता का आग्रह इस देश का जन आंदोलन बन चुका है।आज कोई छोटा बच्चा भी चॉकलेट खाकर उसका रैपर रास्ते पर न डालकर अपनी जेब में रख लेता है, या कचरापेटी में डालता है, इसे देखकर एहसास होता है कि वास्तव में देश बदल रहा है।

डॉ. बाबासाहब भीमराव आंबेडकर को सच्चा सम्मान – आजादी के सत्तर साल बाद आज पहली बार मिल रहा है।अब जाकर देश की सरकारों ने डॉ. बाबा साहब आंबेडकर को सच्चा सम्मान दिया है।इंलैण्ड में जिस घर में रहकर डॉ. आंबेडकर जी ने पढ़ाई की, आज वह भारत सरकार व महाराष्ट्र सरकार के आधीन है और वहाँ बाबासाहब का स्मारक बनने जा रहा है।मुंबई में चैत्य भूमि के पास इंदु मिल की विशालकाय जमीन पर बाबासाहब का अंतरराष्ट्रीय स्तर का स्मारक आने वाले दिनों में आकार लेगा- यह बाबासाहब को आज की पीढ़ी की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सात समंदर पार अबुधाबी में वहाँ की सरकार द्वारा अपनी न्यायालयीन अधिकारिक भाषाओं में हिन्दी को तीसरी भाषा के रूप में स्थान दिया जान देश व हिन्दी भाषा – दोनों के लिए सम्माननीय है।

हम 1947 में आजाद हुए।सबसे अधिक मतदाता वाला, विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश भारत बना।डॉ. बाबासाहब ने इस देश को चलाने के लिए संविधान की रचना की।इसी राष्ट्रग्रंथ के आधार पर हमारा देश चलता है।यह वही लोकतंत्र है, जो अपने नागरिकों को रंग, पंथ, धर्म,और लिंग आदि पर ध्यान न देते हुए अपनी पसंद से वोट देने व अपना नेता चुनने का अधिकार देता है।यही हमारे संविधान की सुंदरता है।आज देश का जनतंत्र संविधान की इसी सुंदरता को बरकरार रखने के लिये कटिबद्ध बना है और हर कोई अपने - अपने स्तर पर इस देश को बनाने के काम में लगा है।आइये हम सब भी इस उभरते और बदलते भारत के नेतृत्व कर्ता बन कर अपना सर्वश्रेष्ठ देश को समर्पित करें।देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें। ■

(लेखक अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री हैं ।)

'उभरता भारत - नई आशाएं' विषय पर देश भर में संगोष्ठी का आयोजन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, "उभरता भारत- नई आशाएं" विषय पर देश भर में जागरूकता अभियान चला जा रही है। इसके अंतर्गत भारत के अलग-अलग प्रान्तों में विभिन्न तरह के संगोष्ठी, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, मतदाता जागरूकता अभियान आदि चलाये जा रहे हैं। जिसके माध्यम से परिषद्, भारत मे हो रहे नवाचार, तकनीक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक उन्नति और अपने स्वर्णिम अतीत के बारे में अधिक से अधिक लोगों तक जानकारी पहुंचा रही है।

इसी क्रम में "उभरता भारत- नई आशाएं" विषय पर अभाविप अवध प्रान्त के द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री आशीष चौहान ने शिक्षकों तथा छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि, इंडिया ही भारत है यह किसी बहस का विषय नही है, भारत सदैव से गतिमान रहा है, यहां पूर्णविराम जैसी कोई स्थिति ही नही है। जब भी विश्व की उच्च शिक्षा प्रणालियों की चर्चा होती है तो उसमें भारत का स्थान शीर्ष पर आता है, हमारे यहां लगभग साढ़े छः सौ छात्रों पर एक उच्च शिक्षा संस्थान है जबकि अमेरिका में 3000 पर एक व चीन में 8000 छात्रों पर एक उच्चशिक्षा संस्थान है।1950 से आज तक भारत लगातार युवा हो रहा है। भारत ने विकास के हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किये है। इसरो(ISRO) द्वारा सम्पूर्ण विश्व मे भारत का परचम लहराना इसका सशक्त उदाहरण है। सही मायने में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम इस उभरते भारत के नायक हैं। उनका विजन 2020 इस देश का विजन है। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे लखनऊ विश्विद्यालय के कुलपति प्रो. एस. पी. सिंह ने कहा कि हम सभी स्वामी विवेकानंद के वंशज है, हमे गतिमान रहना होगा जो जीवंत व गतिमान नहीं होगा उससे बदलाव की उम्मीद करना व्यर्थ है। अभाविप ही एक ऐसा छात्र संगठन है जो नए विचारों को लेकर निरंतर गतिशील है।

दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मिलिंद मराठे ने भारत के विकास पथ पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में भारत लगातार विश्व का नेतृत्व कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में हमें ध्यान में आएगा कि सेना की शक्ति तथा सेना का मान समय के साथ देश में बढ़ा है। साथ ही हमारे देश में 200 निजी कंपनियों को आईडीडीएम के तहत रजिस्टर किया गया। हमारा देश आज इतना शक्तिशाली बना है कि

वह आतंकवाद के विरुद्ध लगातार ठोस कदम उठा रहा है। यदि हम कनेक्टिविटी की बात करें तो सड़क से लेकर रेल तक सभी क्षेत्रों में भारत ने प्रगति की है। आज भारत देश के पास T - 18 नामक रेल भी है जो 180 किलोमीटर की गति से दौड़ती है। यदि हम विज्ञान की बात करे तो इसरो, डीआरडीओ सभी संस्थाओं ने कारगर कार्य किए है। संगोष्ठी में अभाविप के राष्ट्रीय सह - संगठन मंत्री श्रीनिवास, राष्ट्रीय मंत्री निधि त्रिपाठी, डूसू अध्यक्ष शक्ति सिंह, डूसू सह सचिव ज्योति चौधरी, प्रांत अध्यक्ष डॉ अवनीश मित्तल तथा प्रांत मंत्री सिद्धार्थ यादव समेत सैंकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति के लिए शरणम शुक्ल की रिपोर्ट)

मध्यकालीन दशगुरु परम्परा के उन्नायक
श्री नानक देव जी का चिन्तन व विरासत

डा0 कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

महाभारत के युद्ध को हुए पाँच हज़ार साल से भी ज़्यादा हो गए हैं। यह युद्ध जिसे धर्म और अधर्म के बीच युद्ध कहा जाता है, पंजाब की धरती पर ही कुरुक्षेत्र के मैदानों में हुआ था। युद्ध शुरु होने से पहले का श्रीकृष्ण का एक लम्बा वक्तव्य मिलता है जो गीता के नाम से जगत में प्रसिद्ध है। इस वक्तव्य में श्री कृष्ण ने कहा है -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
तदात्मानं सृजाम्यहम्।। 4-7)
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। 4-8

गुरु नानक देव जी के जन्म के अवसर को भाई गुरदास ने भी चित्रित करते हुए लिखा है -

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ।
चरन धोइ रहरासि करि चरणामृत सिखां पीलाइआ।(भाई गुरदास, वार-1, पउडी 23)

बाद में नानक देव जी ने स्वयं भी लिखा था कि देश में से धर्म तो मानों पंख लगा कर उड़ गया हो।

नानक देव वेदी वंश में पैदा हुए थे, इस वेदी कुल की उत्पत्ति एवं ऐतिहासिकता का वर्णन दशगुरु परम्परा के दशम गुरु श्री गोविन्द सिंह जी ने अपनी आत्मकथा, बिचित्र नाटक में किया है। गोविन्द सिंह जी नानक देव द्वारा स्थापित दशगुरु परम्परा के दशम गुरु थे। वे हिन्दी, पंजाबी, ब्रज भाषा, संस्कृत और फ़ारसी इत्यादि अनेक भाषाओं के ज्ञाता ही नहीं थे बल्कि अनेक विषयों के प्रकांड पंडित भी थे। भारतीय इतिहास की उनकी समझ बहुत गहरी थी। औरंगज़ेब को लिखे जफरनामा में इसके प्रमाण मिलते हैं। नानक वंश को जानने समझने के लिए गोविन्द सिंह की आत्मकथा सबसे प्रामाणिक और महत्वपूर्ण स्रोत कही जा सकती है। गोविन्द सिंह जी सूर्यवंश की पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हैं।

बनता कद्रू दिति अदिति ए रिख बरी बनाइ।।(बिचित्र नाटक 2-18)

महर्षि कश्यप की चार पत्नियाँ थीं। वनिता, कद्रू, दिति और अदिति। अदिति के पुत्रों से सूर्यवंश शुरु हुआ। इसी वंश में राजा रघु हुए। रघु के पुत्र का नाम अज था। अज का पुत्र दशरथ था। दशरथ के चार पुत्र हुए। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। राम के दो सुपुत्र थे। राम के सुपुत्र लव ने लाहौर शहर की स्थापना की और उनके दूसरे पुत्र कुश ने क़सूर नगर की स्थापना की। कालान्तर में लव के वंश में कालराय और कुश के वंश में कालकेतु नाम के राजा हुए। दोनों वंशों में झगड़ा शुरु हो गया। क़सूर नरेश कालकेतु जीत गया और लाहौर नरेश कालराय पराजित हो गया। कालराय भाग कर सनौढ देश को चला गया। वर्तमान काल का मथुरा भरतपुर क्षेत्र उन दिनों सनौढ कहलाता था। सनौढ के राजा ने अपनी पुत्री का विवाह कालराय से कर दिया। कालराय के पुत्र का नाम सोढीराय था। उसने अनेक वर्षों तक सनौढ प्रदेश पर राज किया और उसी के नाम से वंश का नाम भी सोढी पड़ गया। लेकिन लव के पौत्र-प्रपौत्र यह भूल नहीं पाए थे कि कसूरवालों ने उन्हें पराजित कर लाहौर से भगाया हुआ है। उसी पराजय का बदला लेने के लिए सोढीवंशियों ने लाहौर पर हमला कर दिया। लववंशियों और कुशवंशियों का भयंकर युद्ध हुआ। लववंशी विजयी हुए और कुशवंशी राजा देवराय पराजित हो गया। कुशवंशी अपने बचे खुचे योद्धाओं को लेकर काशीजी को चले गए। वहाँ जाकर उन्होंने वेदों का अध्ययन करना शुरु कर दिया और वे वेदपाठी हो गए। वेदपाठी होने के कारण वे वेदी के नाम से प्रसिद्ध हो गए। गोविन्द सिंह जी

ने बिचित्र नाटक में इसका उल्लेख इस प्रकार किया है -

जिनै बेद पट्ठिओ सु बेदी कहाए।।

तिनै धरम के करम नीके चलाए।।(4-1)

पंजाब में सोढियों को अपने भाईयों की इस विद्वत्ता का पता चला तो उन्होंने साग्रह सन्देशवाहक भेज कर उन्हें वापिस पंजाब बुलाया। यह संदेश मिलने पर वेदी वंश के लोग प्रसन्नता पूर्वक पंजाब में आ गए। गोविन्द सिंह लिखते हैं-

सभै बेद पाठी चले मद्र देसं।।

प्रनामं कीयो आनकै कै नरेसं।।(4-2)

इन वेदपाठी कुशवंशियों ने सोढी राजा को वेद सुनाए। वेदपाठ सुन कर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपना राजपाट अपने भाई इन कुशवंशियों को दे दिया और स्वयं राजपाट त्याग कर अरण्यगामी हुए। वेदियों की कई पीढ़ियों ने राज किया। लेकिन धीरे - धीरे वेदियों में फूट पड़ गई। लड़ाई - झगड़े बढ़ने लगे और धीरे - धीरे उनके हाथ से राजपाट खिसकने लगा। अन्त में स्थिति यह हो गई कि वेदियों के पास केवल बीस गाँव बचे। वेदपाठ तो कभी का बन्द हो गया। अब वेदी खेतीबाड़ी का काम करने लगे थे। गोविन्द सिंह लिखते हैं--

बीस गाव तिन के रहि गए।।

जिन मो करत क्रिसानी भए।।(5-3)

इसी कालखंड में वेदी वंश में नानक देव जी का जन्म हुआ। गोविन्द सिंह जी लिखते हैं-

तिन बेदीअन की कुल बिखै, प्रगटे नानक राए।

सब सिखन को सुख दऐ जह तह भए सहाए।।(5-4)

(बिचित्र नाटक के दूसरे अध्याय से लेकर पाँचवे अध्याय तक में वेदी वंश की उत्पत्ति की ऐतिहासिक कथा का वर्णन किया गया है। ज्ञानी नारायण सिंह ने इन प्रसंगों की व्याख्या की है।)

वेदियों के इस कुल में नानक देव जी का जन्म पश्चिमी पंजाब के तलवंडी(यही तलवंडी गाँव आजकल ननकाना साहिब से जाना जाता है) नामक ग्राम में विक्रमी सम्वत 1526 के कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेहता खत्री परिवार में हुआ था।(कुछ विद्वान उनका जन्म वैशाख मास मानते हैं)(जनरल सर जोहन जे एच गोरडोन ने अपनी पुस्तक दी सिक्ख में गुरु नानक देव जी को जाट बताया है। इसी प्रकार उसने दशगुरु परम्परा के अन्य सभी गुरुओं को भी जाट ही लिखा है, जो सही नहीं है। पंजाब को जीतने के बाद अनेक अंग्रेज़ नौकरशाहों ने पंजाब के इतिहास व सिक्खों के इतिहास पर अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें तथ्यों की व व्याख्या की इस प्रकार की गल्तियों की भरमार है। जनरल सर जोहन जे एच गोरडोन, दी सिक्खज, पृष्ठ 13) उस समय यह गाँव राय बुलार की तलवंडी कहलाती थी। उनके पिता का नाम कल्याण चन्द मेहता था जो आमतौर पर कालू मेहता के नाम से प्रसिद्ध हैं। माता का नाम तृप्ता था। उनके पिता शासकीय सेवा में पटवारी के पद पर कार्यरत थे। नानक देव जी की एक बड़ी बहन भी थी, जिसका नाम नानकी था।

नानक देव बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न थे। उनके पिता ने जब उनको कुछ पैसे दिए कि कोई लाभकारी व्यवसाय करो जिसमें चार पैसे का लाभ हो। कोई ऐसा सौदा जिसमें लाभ जरुर हो। वैसे तो सभी व्यवसाय लाभ के लिए ही तो किए जाते हैं। नुक़सान के लिए कौन सौदा करता है ? नानक देव ने भी ऐसा ही सौदा किया। उन्होंने उन पैसों से भूखे साधुओं को भोजन करवा दिया। भूखे साधु तृप्त हुए और नानक को लगा कि सौदे में इससे ज़्यादा और लाभ नहीं हो सकता। वे प्रसन्नतापूर्वक घर आकर पिताजी को इस सच्चा सौदा के बारे में बताने लगे लेकिन पिता को इस सौदे में कोई लाभ नज़र नहीं आया। उनके लिहाज़ में तो पूँजी लुट गई। पिता नानक को घर में बाँधना चाहते थे लेकिन नानक साधु संग घूम रहे थे। इस प्रकार के हालत में हर भारतीय माता पिता को एक ही रास्ता सूझता है। नानक देव के पिता ने भी वही रास्ता चुना और नानक देव जी की शादी बटाला में कर दी गई। लेकिन आजीविका का क्या हो ? इस मरहले पर नानक की बड़ी बहन नानकी और उनके पति जयराम आगे आए। वे नानक देव को अपने साथ सुल्तानपुर लोदी ले गए, वहाँ नवाब दौलत खान के प्रशासन में नौकरी दिलवा दी। नौकरी तो ज़्यादा देर निभ नहीं पाई लेकिन तीन दिन स्थानीय नदी में समा जाने के बाद उन्होंने वह ज्ञान दिया जो कालान्तर में पश्चिमोत्तर भारत में तो एक प्रकार से मूलमंत्र ही बन गया।' इक ओंकार सतिनाम। और नबाबों की नौकरी छोड़ कर वे भारत की यात्रा के लिए चल पड़े। उन्होंने अपने जीवन के लगभग पच्चीस साल इन यात्राओं में खपा दिए। सम्पूर्ण भारत को समझने-समझाने का प्रयास। नानक देव के जीवन के संध्याकाल में मध्य एशिया के एक बर्बर आक्रमणकारी बाबर ने भारत पर हमला किया। नानक देव ने उच्च स्वर से उसका विरोध किया। नानक देव जी ने अपने देहान्त से पहले अपने शिष्य को अंगद नाम देकर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। इस प्रकार देश के इतिहास में दशगुरु परम्परा की शुरुआत हुई।

भारतीय इतिहास के मध्यकाल के भक्ति आन्दोलन में

अनेक सम्प्रदाय प्रफुल्लित हुए। लगभग सभी निर्गुण सम्प्रदायों ने एकेश्वरवाद की बात की। जाति - पाँति के भेद - भाव की केवल निन्दा ही नहीं की बल्कि उसे अपने अपने सम्प्रदाय में व्यवहारिक रूप से नकारा भी। कबीर ने तो इसके लिए अत्यन्त सख़्त भाषा का इस्तेमाल भी किया। 'जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया' कबीर का कहा हुआ दोहा ही है। नामदेव, तुकाराम, रविदास, सभी जाति व्यवस्था के ख़िलाफ़ थे। अच्छे कर्म और अच्छे आचरण पर सभी ने ज़ोर दिया। ईश्वर की महिमा सभी ने गाई और सभी ने गुरु की महत्ता पर ज़ोर दिया। रहस्यवादी चेतना भी अनेक आचार्यों और सन्तों में मिल ही जाएगी। जैसे नानक देव जी की परम्परा आगे बढ़ी, वैसी अन्य अनेक सन्तों/सम्प्रदायों की भी आगे बढ़ी। बाक़ी सन्तों और गुरुओं की परम्परा अपने दायरों तक सिमट कर रह गई और उन्हीं रूढ़ियों या कर्मकांडों में फिसल गई जिनके ख़िलाफ़ उन्होंने आवाज़ उठाई थी। लेकिन गुरु नानक जी ने जो परम्परा स्थापित की, वह उस ऐतिहासिक खालसा पंथ की जन्मदाता बनी और जिसने भारत से विदेशी मुग़ल- अफ़ग़ान सत्ता को उखाड़ फेंकने में प्रमुख भूमिका ही अदा नहीं कि बल्कि विदेशी इस्लामी शासकों द्वारा चलाए जा रहे मतान्तरण आन्दोलन को भी बहुत सीमा तक रोका। पश्चिमोत्तर भारत के विषय में तो यह बात निश्चय से ही कही जा सकती है। पश्चिमोत्तर भारत या सप्त सिन्धु का अधिकांश हिस्सा मसलन ख़ैबर पख्तूनख्वां, बलोचिस्तान, सिन्ध और पश्चिमी पंजाब तो दशगुरु परम्परा के उदय होने से पहले बहुत सीमा तक मतान्तरित हो चुका था और सैयद कलन्दरों व सूफ़ियों के डेरों का अड्डा बन चुका था। गुरु नानक देव जी के उन्नयन से इन सूफ़ियों और सैयद, कलन्दरों से संवाद शुरु हुआ। गुरु नानक देव जी की जन्म साखियों में ऐसे अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं। ऐसे सैयद डेरों के चमत्कारों का आतंक उन्होंने ख़त्म किया। गुरु नानक देव जी की समस्या इस्लाम नाम का मज़हब नहीं था। न ही उस मज़हब को मानने वाले मुसलमान थे। किसी मज़हब से उनका कोई विवाद नहीं था। यदि हर मज़हब ईश्वर से साक्षात्कार की बात ही करता है तो वह किसी भी तरीक़े से हो सकता है, इसलिए किसी की भी निन्दा करने की ज़रूरत ही नहीं है। बल्कि गुरु नानक देव ने तो सच्चा मुसलमान कौन हो सकता है, उसकी परिभाषा भी मक्का - मदीना में जाकर अरबों को ही समझाई। गुरु नानक देव तो हिन्दुस्तान में उन मुसलमानों को सम्बोधित कर रहे थे जो विदेशी आक्रमणकारियों के आक्रमणों के कारण किन्हीं कारणों से मतान्तरित हो गए थे। जब वे मुसलमानों को सम्बोधित कर रहे हैं तो वे वास्तव में उन मतान्तरित भारतीय मुसलमानों को ही सम्बोधित कर रहे हैं। यह मानना पड़ेगा कि गुरु नानक देव जी की इस लोक संचारक प्रणाली से कुछ सीमा तक पश्चिमोत्तर भारत में मतान्तरण रुका। भारत में इरफ़ान हबीब स्कूल आफ हिस्ट्री के अध्यापक चाहे गुरु नानक देव जी के इस ऐतिहासिक योगदान की चर्चा न करें लेकिन आज पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश मतान्तरण से बचा है उसका श्रेय नानक देव के उन्नयन को ही जाता है। उनसे पहले आक्रमणों और अत्याचारों की चक्की में पिस रहा सप्त सिन्धु मुसलमान बन रहा था।"In west Punjab, particularly, whole tribes like, Tiwanas, Sials, Gakhars, Janjuas ets accepted new faith Islam with a view to preserve their social status."(Fauja Singh, Religio-cultural heritage of the Punjab, from the book, The Sikh Tradition:A continuing reality, edited by Sardar Singh Bhatia and Anand spencer, page 19)

मुग़ल आक्रमण काल में ही साहसपूर्वक बाबरवाणी सुनाने वाले नानक देव पलायनवादी नहीं थे बल्कि यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर भविष्य की रणनीति निर्धारित करने वाले कर्मयोद्धा थे। इसलिए गुरु नानक मार्ग की खालसा पंथ में परिणति उसका स्वभाविक विकास था। लेकिन भारतीय दर्शन शास्त्र के भीतरी मर्म को अनजाने में या फिर जानबूझकर कर पकड़ पाने में असमर्थ इतिहासकार, गुरु नानक देव जी से शुरु हुई परम्परा की परिणति जब खालसा पंथ में देखते हैं तो इसे नानक देव के पथ से विचलन बताना शुरु कर देते हैं। उनके लिहाज़ से यह विचलन पाँचवे गुरु श्री अर्जुन देव जी से ही शुरु हो गया था और इसकी स्पष्ट गूँज छटे गुरु हरगोविन्द जी में दिखाई पड़ती है, जब उन्होंने मीरी और पीरी की दो तलवारें धारण कीं। सांसारिक कार्यों की साधना के लिए तलवार धारण करना उनकी दृष्टि में नानक के मार्ग से विचलन है। गोकुल चन्द नारंग ने इसे अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ट्रांसफॉरमेशन से सम्बोधित किया है।(transformation of Sikhism, Gokul Chand Narang) लेकिन एक बात ध्यान में रखनी चाहिए, दश गुरु परम्परा के प्रथम गुरु श्री नानक देव जी से लेकर दशम गुरु श्री गोविन्द सिंह जी एक ही वैचारिक परम्परा के वाहक हैं। उस परम्परा में वैचारिक निरन्तरता भी है और कर्म की निरन्तरता भी विद्यमान है। उस परम्परा में विचलन की तलाश करना, परम्परा को ठीक से न समझ

पाने और तत्कालीन भारतीय जनमानस को न पढ़ सकने के कारण ही हो सकती है। इसलिए पंचम गुरु अर्जुन देव जी की शहादत, मीरी पीरी के संकल्प, नवम गुरु श्री तेगबहादुर की शहादत और दशम गुरु द्वारा राष्ट्र और धर्म के लिए सर्वस्व अर्पित कर देने के इतिहास के बीज हमें गुरु नानक देव जी की वाणी और उनकी जीवन यात्रा के प्रसंगों में से ही तलाशने होंगे। गुरु गोविन्द सिंह जी, गुरु नानक देव के सन्देश और परम्परा को ही युगानुकूल बना कर प्रसारित कर रहे थे। एक बात का ध्यान रखना चाहिए, विदेशी इस्लामी राज्य का जो क़ाज़ी सुल्तानपुर लोदी में गुरु नानक देव जी के पीछे पड़ गया था और उन्हें मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए राज्यादेश से ले गया था, उसने दशगुरु परम्परा का पीछा दशम गुरु गोविन्द सिंह तक किया और उनके दो सुपुत्रों को सरहिन्द की दीवारों में ज़िन्दा चिनवा कर ही दम लिया। इस्लाम का यह क़ाज़ी दशगुरु परम्परा के उदय काल से ही, उसके पीछे पड़ गया था और यह परम्परा के दशम गुरु तक उसका पीछा करता रहा। यदि इसको हम प्रतीक भी मान लें तो ऐतिहासिक सन्दर्भों में इसका शिनाख्त भारत में इसके आगमन से भी की जा सकती है, जब यह पहली बार सिन्ध में मोहम्मद बिन क़ासिम के साथ दाख़िल हुआ था। जब हम दशगुरु परम्परा का अध्ययन और मूल्याँकन करते हैं तो हमें इस क़ाज़ी की भूमिका को भी ओझल नहीं होने देना चाहिए।

खालसा पंथ की स्थापना, गुरु नानक परम्परा द्वारा किया गया ऐतिहासिक चमत्कार ही कहा जाएगा। गुरु नानक जी ने भारतीय समाज में यह जो चमत्कार किया। उसका कारण यह है कि उन्होंने सामाजिक जीवन का आध्यात्मिकीकरण किया। यह ठीक है कि नानक देव जी भी अन्ततः परमात्मा से साक्षात्कार की साधना कर रहे थे लेकिन उनके साक्षात्कार का रास्ता हिमालय की कन्दराओं से होकर नहीं जाता था बल्कि उनका रास्ता तो इन्हीं सांसारिक गली - मुहल्लों में से होकर गुज़रता था जिसके रास्तों में, कलि काते राजे कसाई बैठे थे और जिनके रास्ते में मध्य एशिया के एक निर्दयी तुर्क पाप की जंज लेकर भारत पर आक्रमण कर रहा था। जिसने हिन्दुस्तान डराया हुआ था। गुरु नानक को एक साथ लोभ मोह अहंकार जैसी वृत्तियों को पराजित करने की साधना भी करनी थी और उसके साथ कसाई राजा और पाप की जंज लेकर आक्रमण कर रहे बाबर को परास्त करने का रास्ता भी तलाशना था। इसीलिए सीता राम कोहली बाबरवाणी को दमन के ख़िलाफ़ प्रथम अभिव्यक्ति मानते हैं। लेकिन कुछ आधुनिक इतिहासकार इस बात को स्वीकारने को तैयार नहीं हैं कि नानक देव जी की वाणी व कर्मशीलता के सामाजिक सरोकार भी थे। उनके अनुसार नानक देव विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक पथ के पथिक थे। गुरतेज सिंह ने ऐसे कुछ उदाहरण विशेष रूप से अपने एक आलेख में उद्धृत किए हैं। इनमें sir Charles Gough, C.H. Payne, John J.H.Gordon, W.L.M. Gregor का विशेष उल्लेख किया जा सकता है।"(Gurtej Singh, Political ideas of guru Nanak, The originator of the Sikh faith, Recent researches in Sikhism, edited by Jasbir Singh Mann and Kharak Singh में संकलित में से उद्धृत, पृष्ठ 68 and 63) ये सभी विदेशी लेखक बिना गुरुवाणी पढ़े यह दावा करते हैं कि नानक देव ने जिस मार्ग का अनुसरण किया था वह विशुद्ध रूप से धार्मिक या रिलिजियस था। उनकी वाणी में कोई राजनैतिक या सामाजिक स्वर नहीं है। लेकिन गुरतेज सिंह इसके साथ ही एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी करते हैं कि "गुरुवाणी को लेकर इस प्रकार का निष्कर्ष निकालने वाले अधिकांश तथाकथित विद्वान ब्रिटिश साम्राज्य के समर्थक ही हैं।(गुरतेज सिंह पृष्ठ 63) नानक वाणी का कोई राजनैतिक स्वर है या नहीं, इस पर तो फिर भी दो मत हो सकते हैं लेकिन इसमें कोई बहस नहीं हो सकती कि इन विदेशी लेखकों का यह निष्कर्ष उनके राजनैतिक स्वार्थ साधना की पूर्ति का हिस्सा है। नानक देव तो ये दो - दो साधनाएँ एक साथ करते दिखाई देते हैं। लेकिन यह उनकी व्यक्तिगत साधना मात्र नहीं थी बल्कि वे तो भविष्य के भारत का भी साक्षात्कार कर रहे थे। वे भविष्यद्रष्टा भी थे। उन्हें तो एक ऐसी परम्परा स्थापित करनी थी जो उनके बताए रास्ते पर चलकर उनके अधूरे काम को पूरा कर सके। और सचमुच उनकी दशगुरु परम्परा ने यह कर दिखाया। जिस परम्परा ने हिन्दुस्तान को डरा रहे बाबर को देखा था, उसी परम्परा ने 'हिन्द की चादर' को पैदा किया। भारतीय संत परम्परा के अध्येता डा० कृष्ण गोपाल का मानना है "गुरु नानक देव के जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू, इस्लाम के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष हेतु वातावरण तैयार करना भी है। श्री गुरु नानक देव ने वह फ़ौलाद तैयार किया है, जिससे आगे चलकर, राष्ट्र और समाज की रक्षा के लिए, इस्लाम की आततायी शक्ति से दीर्घकाल तक संघर्ष करने वाली संत तलवार का निर्माण पंजाब में हुआ। "(कृष्ण गोपाल, भारत की संत परम्परा और सामाजिक समरसता, पृष्ठ 210) ■

(लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के कुलपति हैं)

शोध के बहाने भारतीय जनमानस को बरगलाने का हुआ प्रयोग : एन. के. तनेजा

शोध (स्टूटेंट फॉर हालिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ ह्यूमानिटी) के द्वारा तीन दिवसीय शोध कार्यशाला का आयोजन

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति एन. के. तनेजा ने कहा कि देश की आजादी के बाद कई लोगों के द्वारा शोध के बहाने भारतीय जनमानस को बरगलाने का प्रयोग किया गया और अभी भी यह प्रयास जारी है। इसलिए हमें ऐसे विषयों पर भी शोध करना चाहिए जिसको सिर्फ वामपंथ विचार से प्रेरित कर अब तक समाज के बीच रखा गया है। उन्होंने कहा कि शोध के लिए कठिन मेहनत की जरूरत होती है और मेहनत का कोई शार्ट कट नहीं होता। उन्होंने ये बातें स्टूटेंट फॉर हालिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ ह्यूमानिटी(शोध), आईसीसीआर और गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित शोधार्थियों के तीन दिवसीय संगोष्ठी के उदघाटन समारोह में कहीं। वहीं गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति भगवती प्रकाश शर्मा ने कहा कि भारत के शोधार्धियों को अपने पारंपरिक ज्ञान - विज्ञान पर शोध करने की अत्यंत आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि देश के समक्ष खड़ी चुनौतियों के निदान हेतु राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े विषय पर बड़े स्तर पर शोध करने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के मुख्य अतिथि अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने कहा कि वैश्विक स्तर पर भारत उभर रहा है, उभरते भारत में लोगों की आशाएं भी बढ़ी है और सबसे ज्यादा अपेक्षा भारत के युवा वर्ग से है। आप ऐसे विषय पर शोध करें जो राष्ट्र हित से जुड़ा हो एवं उसका संबंध सीधे आम जनता से हो। वरिष्ठ पत्रकार व इंडियन स्टडीज प्रोजेक्ट की निदेशक मधु किश्वर ने शोधार्थियों को शोध कार्य प्रणाली व रिसर्च आर्टिकल राइटिंग के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आदर्श शोध बंद कमरे में नहीं होते हैं बल्कि उनके लिए जमीनी स्तर पर जाकर मेहनत करनी पड़ती है।

राष्ट्र हित के विषयों पर शोध करें युवा : डॉ. नागेश ठाकुर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य सह अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नागेश ठाकुर ने कहा कि भारत एक प्रयोगशाला है। इस देश के शोधार्थियों से राष्ट्र को काफी अपेक्षाएं हैं। विश्व में भारत का मान बढ़ा और भारत जिस गति से विकास कर रहा है वह दिन दूर नहीं जब लोग भारत की ओर उन्मुख होंगें। भारत के विकास की गति को बढ़ाने के लिए हमें भी अपना योगदान देना चाहिए। शोध(स्टूटेंट फॉर हालिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ ह्यूमानिटी) के बारे में बताते हुए राष्ट्रीय संयोजक आलोक पांडेय ने कहा कि स्टूटेंट फॉर हालिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ ह्यूमानिटी के माध्यम से देश भर के शोधार्थियों को अपने क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए एक प्लेटफार्म मुहैया करा रहे हैं। जहां शोध कार्य में आने वाली समस्याओं पर संवाद व हल हो सके। अभाविप के प्रकल्प शोध(स्टूटेंट फॉर हालिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ ह्यूमानिटी) के द्वारा गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा में शोधार्थियों के लिए तीन दिवसीय(15 से 17 मार्च 2019) संगोष्ठी का आयोजन किया गया था, जिसमें देश भर के लगभग 120 छात्रों ने भाग लिया। ■

बलिदान दिवस : भगत, सुखदेव, राजगुरु को अभाविप ने किया याद

23 मार्च 1931 को अंग्रेजी शासन ने भारत के तीन सपूतों - भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी पर लटका दिया था। स्वतंत्रता की लड़ाई में स्वयं को देश की वेदी पर चढ़ाने वाले इन तीनों वीरों को भारतीय युवा अपना आदर्श मानते हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् 23 मार्च को बलिदान दिवस के रूप में मनाती है। अभाविप के द्वारा 23 मार्च को तीनों बलिदानियों की याद में देश भर में कार्यक्रम किये गये एवं विद्यार्थियों को उनकी बलिदानी गाथा से परिचित कराया गया। बलिदान दिवस के मौके पर पटना में अभाविप द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अभाविप, बिहार - झारखंड के क्षेत्रीय संगठन मंत्री निखिल रंजन ने कहा कि भगत, सुखदेव और राजगुरु ने देश की स्वतंत्रता के लिए फांसी स्वीकार की, लेकिन ब्रिटिश दासता नहीं। उन्होंने कहा कि भगत सिंह एक प्रखर देशभक्त और अपने सिद्धांतों से किसी भी कीमत पर समझौता न करने वाले बलिदानी थे। भगत सिंह का भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में कद बहुत ऊंचा है। भगतसिंह ने देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया, वह आज के युवकों के लिए एक बहुत बड़ा आदर्श है।

इतिहास साक्षी है कि युवाओं ने सदैव समय की पुकार को सुना है। चाहे क्रान्ति आध्यात्मिक, सांस्कृतिक रही हो अथवा फिर राजनैतिक एवं सामाजिक। भगत सिंह ने जो ज्योति भारतीय युवाओं के मन मस्तिष्क में जलाई है वो अक्षुण्ण है। ऐतिहासिक परिवर्तन के इस दौर में भगत सिंह ने समग्र क्रांति के लिए युवाओं का आह्वान किया है। आज जहां एकतरफ असुरता अपना पूरा जोर लगाकर सर्वतोन्मुखी विध्वंस का दृश्य प्रस्तुत करने पर तुली है, तो वहीं सृजन की असीम सम्भावनाएं भी अपनी दैवी प्रयास में सक्रिय हैं। इस बेला में युवा हृदय से यह आशा की जा रही है कि वे अपनी मूर्छा, जड़ता, संकीर्ण स्वार्थ एवं अहमन्यता को त्यागकर भगत सिंह के अभूतपूर्व साहसिक अदम्य व्यक्तित्व का अनुगमन कर स्वयं एवं अपने समाज, राष्ट्र व विश्व के उज्ज्वल भविष्य को साकार करने में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाएं। मौके पर पटना विश्वविद्यालय के सिंडिकेट सदस्य पप्पू वर्मा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय सिनेटर आलोक तिवारी, शोध कार्य प्रमुख गौरव रंजन समेत सैंकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

वहीं उधमपुर(जम्मू - कश्मीर) में अभाविप के द्वारा त्रिमूर्ति बलिदान दिवस के उपलक्ष्य पर संगोष्ठी का कार्यक्रम रखा गया था। संगोष्ठी में अपने संबोधन के दौरान रा. स्व. संघ के प्रांत सद्भावना प्रमुख पवन जी ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान के कारण ही आज हम आजादी की सांस ले पा रहे हैं, भगत, सुखदेव, राजगुरू के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। संगोष्ठी में उपस्थित युवाओं से कहा कि अपनी पढ़ाई के साथ - साथ हमें राष्ट्र एवं समाज के लिए समय निकालना चाहिए। कार्यक्रम की शुरुआत संघ सद्भावना के प्रांत प्रमुख पवन जी, अभाविप के प्रदेश उपाध्यक्ष, प्रदेश सह मंत्री प्रदीप जम्वाल द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर की गई। ■

(रिपोर्ट आकाश शर्मा)

How Modi govt made the fourth and fifth frontiers safe with Anti-Satellite test

Dr. Swadesh Singh

At around 11 am on March 27, scientists at Defence Research Development Organisation (DRDO) launched an 18tonne interceptor missile from Balasore range in Orissa. Three minutes later the missile destroyed a 740kg live satellite Microsat-R at an altitude of 274km, pushing India into the elite club of nations that have the capability to strike live targets in space. India - that had been struggling for years to establish itself as a regional power - thereby established itself as a space superpower in one stroke.

This landmark test, nicknamed 'Operation Shakti' was crucial at a time when the country has entered the information age where knowledge and communication has become the key to everything. The rapid expansion of technology in this age has blurred the importance of physical boundaries. In fact, there has been a death of distance making strategic issues more and more reliant of technology and space and cyberspace emerging as the fourth and fifth dimensions of defence. There are reportedly 320 military satellites operating the earth out of these India has only two while China has 35 and US has 140. By displaying this capability, India has sent out a clear message to the world that its space objects are not to be messed with and that it has the ability to target any malignant satellites.

The test has been compared to the Pokhran test in 1998 when Prime Minister Atal Bihari Vajpayee showed the political will to test the capability India already had. The SatKiller test of 2019 is similar in many ways. Here also the country's scientists had developed the capability years ago but the

political leadership of the country did not find the courage to go ahead with it until Prime Minister Narendra Mod came to power. The project was one of the several long-term critical projects listed as priority by the Narendra Modi government and the decision to go ahead with it had been taken in 2014 itself. A team of 3000 DRDO scientists started working on the project two years ago and had been working on mission mode for the last six months to make the operation a success.

Pokhran II had also pushed India into the elite club of countries with nuclear deterrence capability. Though at that time India braved a huge international fallout as the group of nuclear suppliers and non-proliferation signatories stood against us. Even as India tested its anti-satellite capabilities a meeting was underway in Geneva to draft rules on Prevention of Arms Race in Outer Space. A demonstration of capability was crucial to find a place in such a group that gets to decide the rules. This time the government

decided not to miss the bus and went ahead with the test.

Despite its robust space programme, successive Indian governments have been hesitant about stepping into the space game. However, with this decisive and bold step by Prime Minister Narendra Modi, that has changed. The ASAT(Anti-Satellite missile Test) is also expected to add massively to the country's ability to take on high-altitude missiles. While the Prime Minister stated in unequivocal terms that this was a purely defence capability and not intended at creating an arms race, the comparisons with China are unavoidable. China has been, reportedly, has a dedicated force for space and cyberspace operations and is looking towards setting up a "space station with military applications". The Narendra Modi government has also set up a tri-services Defence Space Agency to step up to the challenge. However, unlike China, India did not forget its responsibility to environment in pursuit of its strategic interests. The missile test of Wednesday was done at less than 300km despite having the capability to reach upto 1000km to prevent space debris.

By shooting down a satellite that was reportedly hurling at a speed of 27,000km/hour, India has displayed that it can now disrupt a country's surveillance, navigation and communication capability – the key ingredients of any battlefield scenario. The Modi government has reassured Indians, once again, that they are safe and prepared to face any challenge. ■

(Author teachers Political Science In Delhi University)

कार्यशाला

मेडिविजन की तीन दिवसीय कार्यशाला रोहतक में संपन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के मेडिविजन आयाम द्वारा फिजियोथैरेपी के विद्यार्थियों के लिए हरियाणा के रोहतक में तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का शुभारंभ 30 मार्च को हुआ जिसका समापन 1 अप्रैल को हुआ । तीन दिवसीय कार्यशाला में विशेषज्ञों के द्वारा छात्रों को फिजियोथैरेपी, ड्राई निडलिंग, कपिंग थेरेपी जैसे चिकित्सा से जुड़ी अनेक प्रणालियों से छात्रों को परिचित कराया गया । कार्यशाला में आये छात्रों को अभाविप, हरियाणा के प्रांत संगठन मंत्री श्याम सिंह राजावत ने बताया कि अभाविप एक मात्र ऐसा संगठन है जो प्रत्येक क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए कार्य करता है। मेडिविजन अभाविप का ऐसा आयाम है जो मेडिकल के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर कार्यरत है। कार्यशाला के दूसरे दिन अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल ने विद्यार्थियों को विद्यार्थी परिषद् व उसके विभिन्न प्रकल्पों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों को आगामी चुनाव में शत - प्रतिशत मतदान के लिए भी प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मेडिकल पवित्र व्यवसाय के साथ - साथ समाज सेवा का भी कार्य है। बता दें कि मेडिविजन, अभाविप का आयाम है जो मेडिकल के क्षेत्र में कार्य करती है ।

समापन समारोह में मेडिविजन के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. चिंतन चौधरी ने विद्यार्थियों को बताया कि मेडिविजन मेडिकल की पढाई कर विद्यार्थियों व इस प्रोफेशन के साथ जुडे लोगों के हितों के लिए कार्य करता है। देश में यदि कहीं कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो मेडिविजन की टीम वहां दिन - रात पीडितों की सेवा में लगी रहती है। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार के सेवा कार्य अनेक स्तरों पर मेडिविजन की ओर से समय समय पर चलाए जाते है। कार्यशाला में बतौर प्रशिक्षक पहुंचे सूरत के विद्यापीठ संस्थान के प्राचार्य डॉ. जतिन पटेल ने विद्यार्थियों को ड्राई निडलिंग और कंपिग थैरेपी के बारे में प्रायोगिक तरीकों से विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में विद्यालय की प्राचार्य ममता, पीजीआई की सहायक प्राध्यापक पूनम धनखड, आयाम संयोजक लखविंद्र लोहानी, डॉ. रवि दहिया, डॉ. अरमान, डॉ.नितिष, जितेंद्र सहित अन्य कार्यकर्ता व विद्यार्थी मौजूद रहे।

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति के लिए संदीप आजाद की रिपोर्ट)

छात्रों की रचनात्मता को निखारने का मंच है डिपेक्स : जी. लक्ष्मण

आज से तीस साल पहले अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं के द्वारा महाराष्ट्र में छात्रों के अंदर की रचनात्मकता को निखारने के लिए डिपेक्स की शुरूआत की गई थी। 30 साल पहले जो लोग डिपेक्स में जुड़े थे आज वे कला, तकनीक, शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुके हैं। इसके बावजूद वे लोग डिपेक्स से जुड़े हुए हैं और डिपेक्स की बेहतरी के लिए कार्य कर रहे हैं। अभाविप न केवल शैक्षिक परिसरों में आंदोलन कर छात्रों के हितों की रक्षा करती है बल्कि डिपेक्स, सृजन, सृष्टि, राष्ट्रीय कला मंच, थिंक इंडिया, मेडिविजन, फार्मा विजन, एग्रीविजन के माध्यम से छात्रों की प्रतिभा को निखारने का काम भी कर रही है। ये बातें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय सह - संगठन मंत्री जी. लक्ष्मण ने महाराष्ट्र के नांदेड़ में आयोजित डिपेक्स कार्यक्रम में कहीं। बता दें कि 'डिपेक्स' तकनीक, कला, प्रबंधन इत्यादि के क्षेत्र में काम करने वाला अभाविप महाराष्ट्र का एक आयाम है।

अभाविप महाराष्ट्र और सृजन के द्वारा 30 वीं डिपेक्स प्रतियोगिता का आयोजन गुरु गोविंद सिंह तंत्र शास्त्र महाविद्यालय, विक्रम साराभाई नगर नांदेड़ में आयोजित किया गया था। प्रतियोगिता का उद्घाटन राष्ट्रीय प्रमाणन मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. के. अग्रवाल और महाराष्ट्र राज्य तंत्र शिक्षा बोर्ड के संचालक डॉ. विनोद मोहितकर के द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में महाराष्ट्र और गोवा से 15 हजार से अधिक छात्रों ने अपना पंजीयन कराया था जिसमें (117 महाविद्यालय) 558 प्रतिभागी चयनित किये गये। जानकारी के मुताबिक 2 से 5 मार्च तक चले इस प्रतियोगिता में विभिन्न विषयों पर अलग - अलग सत्र का आयोजन किया गया था। Interactive Session with StartUps/Entrepreneurs सत्र में मुक्तक जोशी (Co-founder of Katkum) एवं विवेक कोबरा (Foundar- Simplified Technologies For Life), Agriculture Problem Technological Solution सत्र में रितेश मिश्रा (Lead- Regulatory Affairs, Mahyco) एवं श्री अमर फाटक managing Partner in AMP ENGINEERING DESIGN VENTURE LLP. (AMPEDV) mumbai and Technical Director in INVENT LABS PVT LTD), New india - Vision for Budding Technocrat's विषय पर मिलिंद जी मराठे (विशेष निमंत्रित सदस्य राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद अभाविप), Rural Rejuvenation इस विषय को पुनीत द्विवेदी(Chief Executive Officer (CEO) At Atal Incubation Centre, Prestige Inspire Foundation), Emerging Trends in Computer and Electronics विषय पर संजीव गुप्ता (Director, National Institute of Electronics And Information Technology, Aurangabad), Woman entrepreneur and innovation विषय केतकी कोकील (Manager New Product Development,Ecosense Appliances Pvt. Ltd., Aurangabad), Industry-Institute Revolution विषय पर संजय कुमार गुप्ता (Director Software Technology Parks of India Pune) आशिष गर्दे (Director, MAGIC Marathwada Accelerator for Growth and Incubation Council, Aurangabad), उदय वांकावला-(Chief Executive Officer, Atal Incubation Centre Rambhau Mhalagi Prabhodini, Mumbai), आशिष उत्तरवार (सृजन विश्वस्त), यशवंत जोशी (Director, Shri Guru Gobind Singhji Institute of e1ngineering and Technology Nanded ने संबोधित किया।

विभिन्न क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को 5 मार्च को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित भी किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य रूप से स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ के कुलपति डॉ. उद्धव भोसले, अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री जी. लक्ष्मण, महाराष्ट्र राज्य तंत्र शिक्षण संचालनालय के सह संचालक महेश शिवणकर, उपस्थित थे। ■

(रिपोर्ट - गोविंद देशपांडे/महाराष्ट्र)

जलियांवाला बाग हत्याकांड के सौ वर्ष

राहुल शर्मा

भारत की समृद्धि को देखकर सदियों से विदेशी इसकी ओर आकृष्ट होते रहे हैं। कई बार व्यापार के लिए और कई बार सत्ता प्राप्ति के लिए। अधिकतर विदेशी आक्रमणकारी इसकी अकूत सम्पदा को लूटने के इरादे से यहां आते रहे हैं। उन्होंने जनसंहार द्वारा हमें डराने का प्रयास किया। साथ ही उन्होंने हमारे स्वाभिमान को भी कुचलने का प्रयास किया। भारत माता के वीर सपूतों ने समय - समय पर ऐसे आततायियों को मुंह तोड़ जवाब भी दिया है। इसी कड़ी में भारत में अंग्रेज व्यापार करने आए। यहां की राजनैतिक परिस्थितियों ने उन्हें सत्तारूढ़ होने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए उन्होंने साम, दाम, दण्ड, भेद सब तरह से हमारे समाज को प्रताड़ित किया, लूटा। 1857 में उनकी सत्ता को प्रबल चुनौती मिली। प्रथम स्वातन्त्र्य समर की असफलता के बाद अंग्रेजों का दमनचक्र और भी तेज हो गया।

1857 की महान क्रांति के पश्चात भारत के इतिहास में अमृतसर का जलियांवाला बाग हत्याकांड पहली भयंकरतम, क्रूर, वीभत्स, विस्फोटक तथा उत्तेजनापूर्ण घटना थी जिसने न केवल भारत के जनमानस को उद्वेलित कुपित और आंदोलित किया अपितु ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी तथा तत्कालीन भारत सरकार की सांसें फुला दीं। साथ ही ब्रिटिश संसद सदस्यों को परस्पर विरोधी प्रतिक्रिया करने को बाधित किया। यह महान उत्तेजना पूर्ण घटना ब्रिटिश शासन द्वारा प्रथम विश्व युद्ध(1914 - 1918) के दौरान किये गये बड़े - बड़े परंतु झूठे आश्वासनों द्वारा की गई कागजी घोषणाओं के खिलाफ एक खुला आह्वान तथा गंभीर चुनौती थी।

प्रथम विश्व युद्ध में पंजाब ने तन, मन, धन से अंग्रेजों का साथ दिया था अतः युद्ध समाप्ति पर अंग्रेजों द्वारा मांटेग्यू -चेम्जफोर्ड कमीशन की रिपोर्ट लागू की गई। इसका पूरे भारत में विरोध हुआ। इसके साथ ही एक और दमनकारी कानून का रोष पंजाब में सबसे अधिक था। 18 मार्च 1919 को रोलेट एक्ट भारतीयों के प्रबल विरोध के बावजूद पारित हो गया। रोलेट एक्ट का चारों ओर विरोध हुआ और इसे काला कानून कहा गया, क्योंकि इसके अंतर्गत गिरफ्तारी के लिए न कोई वकील न कोई दलील और न कोई अपील की गुंजाइश थी। गांधी ने भी सरकार को पत्र लिखकर

अपना विरोध प्रकट किया लेकिन कोई सुनवाई नहीं होने पर उन्हें सत्याग्रह का रास्ता ही ठीक लगा। गांधी जी ने 30 मार्च को हड़ताल का आह्वान किया सभी स्थानों पर संदेश समय पर न पहुंचने के कारण 6 अप्रैल को हड़ताल का आह्वान किया गया। पंजाब में भी सभी स्थानों पर हड़ताल रही, राजनैतिक महत्त्व के दो प्रमुख नगरों, अमृतसर तथा लाहौर में पूरा बंद रहा। अमृतसर के दो बड़े नेताओं डा. सैफुद्दीन किचलू और डा. सतपाल ने महात्मा गांधी को पंजाब में आने का निमंत्रण दिया। वस्तुतः पंजाब गांधी जी की हड़ताल योजना में सबसे आगे था। अमृतसर में 30 मार्च को भी हड़ताल रही। अमृतसर में तो इससे पूर्व 29 फरवरी, 23 मार्च, 29 मार्च को भी रोलेट एक्ट के विरोध में वंदे मातरम हाल में सभाओं का आयोजन किया गया जिन्हें बाबू कन्हैयालाल, बदरुल इस्लाम खां, पं. कोटूमल, लाला दूनीचंद, पं. रामभज दत्त आदि वक्ताओं ने संबोधित किया। 30 मार्च को एक बड़ी सार्वजनिक सभा जलियांवाला बाग में हुई जिसकी अध्यक्षता डा. सैफुद्दीन किचलू ने की तथा पंडित कोटूमल, स्वामी अनुभवानंद तथा दीनानाथ ने भी सभा को संबोधित किया। इसी तरह पंजाब के अन्य जिलों में भी 30 मार्च को सभाएं हुई। बहुत स्थानों पर व्रत रखे गये। लाहौर के कॉलेजों के छात्रावासों में भोजन नहीं बना। 6 अप्रैल की हड़ताल इससे भी अधिक बड़ी थी, जनमानस में रोष बढ़ता जा रहा था। 8 अप्रैल को अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर इर्विंग ने कमिश्नर एच. जे. ड्वल्यू को पत्र लिखकर स्थिति को खतरनाक बताया और सैनिकों की संख्या बढ़ाने की मांग की।

9 अप्रैल को राम नवमी का त्यौहार हिन्दू - मुस्लिम एकता का प्रदर्शन करते हुए उत्साहपूर्वक मनाया गया। डा. हाफिस मोहम्मद वशीर रामनवमी शोभायात्रा का नेतृत्व कर रहे थे। इस हिन्दू - मुस्लिम एकता से अंग्रेज सरकार और भी भयभीत हो गई। 9 अप्रैल को ही ब्रिटिश सरकार ने गांधी जी के पंजाब आने पर रोक लगा दी और उन्हें पलवल रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार कर वापिस मुंबई भेज दिया गया। इससे लोगों में असंतोष और भी बढ़ गया। अमृतसर में स्थानीय कारणों से रोष और उत्तेजना अधिक थी। डिप्टी कमिश्नर इर्विंग से पहले ही पंजाब के लेफ्टिनेंट गर्वनर सर माईकल ओड्वायर ने दमनकारी नीति अपनाई। उसी के आदेश पर डिप्टी कमिश्नर ने 10 अप्रैल को डा. सत्यपाल और डा. किचलू को अपने कार्यालय बुलाया और गिरफ्तार कर ब्रिटिश दस्ते के साथ डलहौजी को भेज दिया। डा सत्यपाल और डा. किचलू की गिरफ्तारी ने आग में घी का काम किया। दोनों नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार नगर में फैलते ही जनता में रोष की लहर व्याप्त हो गई। लोग डिप्टी कमिश्नर के बंगले पर जाने के लिए इकट्ठा होने लगे। भीड़ का नेतृत्व महाशय रतचंद और बुग्गामल कर रहे थे। भीड़ को हालगेट ब्रिज के पास रोक दिया गया और रास्ते रोकने के लिए सैनिक टुकड़ी खड़ी कर दी गयी। सरकारी मजिस्ट्रेट ने भीड़ को गैरकानूनी बताया और गोली चलाने का आदेश दे दिया। 20 - 30 लोग मारे गये अथवा घायल हुए। सरकार के अनुसार 12 लोग मारे गये। भीड़ के उत्तेजित दशा में वापिस लौटने से शहर में हिंसात्मक घटनाएं हुई। भीड़ में अराजक तत्त्व भी शामिल हो गए। कई स्थानों पर लूटपाट और आगजनी हुई। टेलीग्राफ की तारें काट दी गई। तरनतारन में भगतांवाला तथा छरहटा रेलवे स्टेशन नष्ट कर दिए गए।

10 अप्रैल को ब्रिगेडियर जनरल आर . ई. एच. डायर को जालंधर तार भेजकर सेना को बंदूकों और हवाई जहाज से लैस होने को कहा गया। कुछ देर बाद उसे दो तार और मिले एक अमृतसर से और दूसरा लाहौर से। पहले तार में उसे 200 सैनिक अमृतसर भेजने के लिए कहा गया स्थिति को भांपते हुए उसने 200 के बजाय 300 सैनिक स्पैशल ट्रेन से अमृतसर भेजे जो 11 अप्रैल को प्रातः 5 बजे वहां पहुंच गए। जनरल डायर को 11 अप्रैल को 2 बजे पुनः तार मिला जिसमें उसे अमृतसर जाने का आदेश था तथा सिविल शासन को नियंत्रित करने और जो भी उचित लगे वह कार्रवाई करने का आदेश दिया गया। वह 11 अप्रैल रात 9 बजे अमृतसर पहुंच गया।

12 अप्रैल को उसने 125 ब्रिटिश और 300 भारतीय सैनिकों के साथ नगर का निरीक्षण किया। हवाई जहाज द्वारा भी नगर का निरीक्षण किया गया। पायलट की रिपोर्ट के अनुसार नगर शांत था। चौधरी बुग्गामल और दीनानाथ सहित 12 गिरफ्तारियां हुई। डायर को भी यह पता चला कि गिरफ्तार लोगों की रिहाई की मांग करने के लिए मीटिंग हिन्दू सभा हाईस्कूल में होने वाली है। जनरल डायर ने एक निषेधाज्ञा जारी की कि यदि किसी सरकारी सम्पत्ति को हानि हुई तो अपराधी को कड़ी सजा दी जाएगी। उसी समय नगर में यह घोषणा की जा रही थी कि अगले दिन जलियांवाला बाग में दोपहर बाद 4 : 30 बजे एक सभा होने को थी।

13 अप्रैल को जनरल डायर ने एक घोषणा के द्वारा सभी बैठकों, जुलूसों और सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया था और सभी को रात 8 बजे के बाद अपने घरों में रहने का आदेश दिया। डायर के अनुसार उसने यह घोषणा 12 स्थानों पर

करवाई थी। हालांकि उसने यह भी माना कि कई महत्वपूर्ण स्थानों पर घोषणा नहीं करवाई गई। उसी समय एक युवक गुरदित्ता और एक बालू नाम का आदमी किरोसीन के डिब्बे को पीट पीट कर घोषणा कर रहे थे कि जलियांवाला बाग में आज एक सभा होगी जिसकी अध्यक्षता अमृतसर के जाने माने प्रतिष्ठित व्यक्ति कन्हैयालाल करेंगे।

जनरल डायर को जब सूचना मिली कि उसके आदेशों की अवहेलना करके सभा बुलाई गई है तो उसने कठोर कदम उठाने का निश्चय लिया। वह 50 बंदूकधारी सैनिकों के साथ जलियांवाला बाग पहुंचा। यद्यपि यह कोई बाग नहीं था मकानों से घिरा उनके पीछे के हिस्से में खाली मैदान था जिसमें लोग आकर बैठ जाते थे। कोई सभा आदि भी होती रहती थी। इसमें प्रवेश का एक ही छोटा सा 7.50 फूट का दरवाजा था। जनरल डायर के साथ दो हथियार बंद कारें थी परंतु दरवाजा छोटा होने के कारण उन्हें बाहर ही छोड़ देना पड़ा। उसके आने के पहले 7 वक्ता बोल चुके थे। दुर्गादास बोलने वाले थे। जनरल डायर के वहां पहुंचते ही शोर मच गया। उसने बिना चेतावनी दिये गोलियां चलाने का आदेश दिया। भीड़ पर गोली चलाने से पहले चेतावनी दी जाती है फिर आकाश में गोलियां चलाई जाती है फिर खाली जमीन पर, सिपाहियों ने कुछ गोलियां पहले ऊपर चलाई परंतु उसने सीधे भीड़ के ऊपर गोली चलाने का आदेश दिया। 10 मिनट तक गोलियां चलीं जब तक खत्म नहीं हो गई।. मिनटों में हाहाकार मच गया और लाशों के अंबार लग गये। जिधर भी लोग जान बचाने के लिए भागे उसने उसी तरफ गोली चलवाई। उसका उद्देश्य सभा को खदेड़ना नहीं था वह तो सबक सिखाना चाहता ताकि लोग ब्रिटिश शासन से डरकर रहें, कोई आदेश की अवहेलना न कर सके। जलियांवाला बाग में एक कुआं था। कुछ लोग जान बचाने के लिए उसमें कूद गए उनके देखादेखी और लोग भी कुएं में कूदने लगे और दब कर ही मर गए। बाद में 120 लाशें तो उस कुएं से ही निकाली गई।

सरकारी आंकड़ो के अनुसार 379 लोग मारे गए। पंडित मदन मोहन मालवीय जी के अनुसार मृतकों की संख्या 1000 के लगभग थी। स्वामी श्रद्धानंद जी ने महात्मा गांधी को पत्र लिखकर मृतकों की संख्या 1500 के लगभग बताई। लाला गिरधारीलाल जो घटना के बाद बाग में गए थे उन्होंने भी मैदान में पड़े शवों से 1000 के करीब मृतकों का अनुमान लगाया। सरकार ने मृतकों और घायलों के लिए कुछ नहीं किया। लोग मृतकों के शव और घायलों के उपचार के लिए भटकते रहे। इस नृशंस वीभत्स और क्रूर हत्याकांड के बाद पंजाब में स्थान - स्थान पर मार्शल ला लगा दिया गया। दो ला कमिशनों की रिपोर्ट के आधार पर 218 व्यक्ति अपराधी घोषित किए गए। जिनमें से 51 को मौत की सजा तथा अन्य को भिन्न भिन्न सजा सुनाई गई। जिस गली में मिस शेरवुड के साथ झगड़ा हुआ था उस गली में से लोगों को पेट के बल चलना पड़ता था। यातनाएं देने के लिए बैंत से मारना, थप्पड़ मारना, गाली देना, दाड़ी मूंछ नोचना आदि अनेक अमानवीय घृणास्पद तरीके अपनाए गए। बाद में हण्टर कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कई बार उसके तर्कों से असहमति जताते हुए उसकी भर्त्सना की है परंतु लै. गवर्नर माईकल ओड्वायर ने उसके इस नीच कार्य को सही साबित करने का प्रयास किया। 13 अप्रैल को जलियांवाला बाग में बालक ऊधम सिंह भी वहीं था। उसने अपनी आंखों से इस वीभत्स हत्याकांड को देखा। अपने कानों से हजारों लोगों की चीख - पुकार सुनी जिसे वह जीवन भर भुला नहीं सका। अपमान की आग उसके हृदय को जलाती रही। उसने 1940 में इंग्लैंड जाकर लै. गर्वनर ओड्वायर को एक समारोह में गोलियों से भून कर अपने हृदय की आग को शांत किया चाहे इसके लिए उसे फांसी पर झूलकर अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा। ■

(लेखक अभाविप, पंजाब प्रांत के संगठन मंत्री हैं।)

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' अप्रैल 2019 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

नेशन फर्स्ट–वोटिंग मस्ट : चौहान

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् लोकसभा चुनाव में शत् प्रतिशत मतदान व नोटा के प्रयोग पर रोकथाम लगाने के लिए जन जागरण, संगोष्ठी, सम्मेलन, नुक्कड़ नाटक आदि के माध्यम से देश भर में नेशन फर्स्ट – वोटिंग मस्ट अभियान चला रही है। प्रत्येक मतदाता की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जनजागरण अभियान के दौरान अभाविप के कार्यकर्ता लोगों को मतदान के महत्व के बारे में बता रहे हैं। शत – प्रतिशत मतदान के लिए लोगों को प्रेरित करने के लिए परिषद् के कार्यकर्ता नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मदद ले रहे हैं।

नेशन फर्स्ट – वोटिंग मस्ट अभियान के तहत मणिपुर के निंगथाकोम्ब बिष्णुपुर पहुंचे अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि विश्व में भारत सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र को सुरक्षित हाथों में सौंपने के लिए सभी मतदाताओं को सौ प्रतिशत मतदान करना चाहिए और नोटा का प्रयोग बंद करना चाहिए। उन्होंने कहा नोटा के प्रयोग से कई बार अपराधी किस्म के उम्मीदवारों को सांसद व विधायक चुने जाने का मौका मिल जाता है। अभी तक देश भर में लगभग आठ करोड़ नए मतदाता बन चुके हैं, वे देश की सत्ता की कमान तय करेंगे। उन्होंने दावा किया कि परिषद् के सौ प्रतिशत मतदान व नोटा का प्रयोग को बंद करने के अभियान का युवाओं पर साफ असर दिख रहा है। वे लोकसभा चुनाव में जमकर लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए मतदान करेंगे। मोयरांग पहुंचकर ऐतिहासिक नेताजी सुभाष चंद्र बोस संग्रहालय के बाहर उनके पुतले के सामने उन्होंने नेशन फर्स्ट – वोटिंग मस्ट के पोस्टर का विमोचन किया। बता दें कि यह वही स्थान है जहां पर 14 अप्रैल 1944 को आईएनए के द्वारा पहली बार तिरंगा फहराया गया था। पोस्टर विमोचन के दौरान उनके साथ अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री नरेन्द्र सापम, प्रांत मंत्री शरत चंद्र हाबिजम समेते सैंकड़ो परिषद् कार्यकर्ता थे।

वहीं उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पंजाब, राजस्थान, हिमाचल, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में सौ प्रतिशत मतदान के लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए अभाविप कार्यकर्ताओं ने पूरी ताकत लगा दी है। जानकारी के मुताबिक प्रत्येक ब्लॉक में 20 – 20 बैठकें हो चुकी है। प्रांतीय स्तर पर सभी विधानसभा व ब्लॉकों के संयोजक और सह संयोजक घोषित हो चुके हैं। कार्यकर्ता सभी स्कूल, कॉलेज एवं विश्वविद्यालय में जाकर विद्यार्थियों को मतदान के लिए जागरूक कर रहे हैं साथ उन्हें भी इस अभियान में सहभागी बनने का आग्रह कर रहे हैं। अभाविप की मानें तो हाल में ही कुछ नकारात्मक संगठन द्वारा NOTA का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, जो नकारात्मक राजनीति का ही एक रूप है। जिसके कारण मताधिकार जैसे महत्वपूर्ण अधिकार निष्फल हो जाते हैं और हमारे बीच गलत प्रतिनिधि चुनने की

सम्भावना बढ़ जाती है। हमें भाई भतीजावाद मिटाना है। मतदाता जागरूक अगर नहीं हुआ अब भी तो देश की संस्कृति को ये स्थिति बदनाम करेंगी। युवा मतदाता में ही वो शक्ति है जो राष्ट्र को बदल सकतीं हैं "छात्र कल का नहीं बल्कि आज का नागरिक है"। आज भारत विश्व का सबसे युवा देश हैं। आज विश्व की नजर वर्तमान 62 प्रतिशत युवा तरूणाई पर है। इसलिए युवाओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करते हुए सकारात्मक पहल करनी चाहिए। आगामी चुनाव में युवाओं की सहभागिता बढ़ाना होगा। "सफल लोकतंत्र का भाग्य विधाता देश का शिक्षित, युवा, जागरूक मतदाता"। ■

महात्मा गांधी की सार्धशती पर विशेष आलेख श्रृंखला - 7

संचार-संस्कृति में संतुलन का यक्षप्रश्न

|डा. जयप्रकाश सिंह|

जब विश्वसनीयता असंदिग्ध होती है तो मौन बोलने लगता है। गांधी के संदर्भों में देखें तो उन्होंने विश्वसनीयता का एक ऐसा स्तर अर्जित किया था कि उनका मौन होना भी उबाल पैदा कर देता था। विश्वसनीयता के साथ संदेश-सम्प्रेषण के सर्जनात्मक तरीके ईजाद करने की उनकी क्षमता उन्हें सर्वश्रेष्ठ संचारक बना देती है।

गांधी की संचारीय-सक्षमता इस कदर थी कि उनका मौन, उनका उपवास, उनका खाना, उनका कपड़ा, सब कुछ सार्वजनिक संदेशों को सम्प्रेषित करने का जरिया बन जाता है। दुर्भाग्यवश, उनका आकलन राजनेता समाज-सुधारक, आध्यात्मिक विभूति, अर्थशास्त्री सभी रूपों में की गई लेकिन एक संचारक के रुप में उनकी सफलताओं पर कम ही ध्यान गया है। गांधी को राजनेता अथवा संत के रूप में समझने के साथ एक सफल संचारक के रूप में समझने की कोशिश उनके व्यक्तित्व के बुनावट की कई उलझनें सुलझा सकता है और उनकी सीमाओं और सामर्थ्य को भी अधिक स्पष्ट बना सकता है।

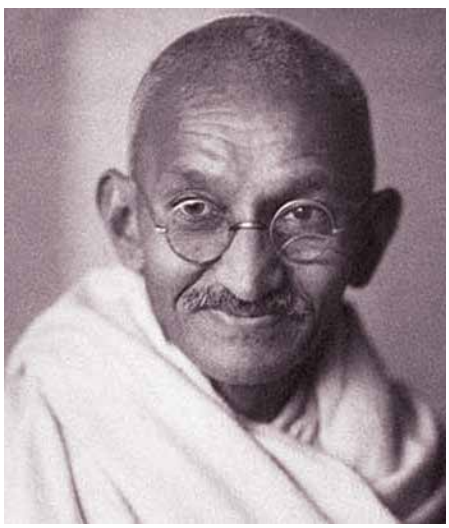

गांधी की संचारीय-सक्षमता केवल तकनीकी-कौशल एवं भाषायी-प्रवाह पर निर्भर नहीं है। तत्कालीन भारत की सामाजिक - सांस्कृतिक समझ उन्हें बेजोड़ सम्प्रेषक बना देती है। प्राय़ः नवाचार की स्वीकृति कम समय में नही होती लेकिन गांधी के संदर्भ में यह नही कहा जा सकता। इसका कारण यह था कि अधिकांश मामलों में उनका नवाचार परम्परा भंजक नही होता था, बल्कि परम्परा को परिष्कृत और पोषित करने वाला होता था।

मसलन उस दौर में साम्यवाद का रुमानी विचार सबको सम्मोहित किए हुए था लेकिन गांधी इस शब्द के जरिए आदर्श समाज का खाका लोगों को सामने नहीं रखते। उन्होंने साम्यवाद की जगह रामराज्य शब्द स्वीकार किया और रामराज्य को आदर्श सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। देखने में यह छोटा सा कदम था लेकिन ऐसे छोटे कदम ही गांधी की स्वीकार्यता को बढ़ा देते थे। स्वाभाविक सी बात है कि भारतीय संदर्भों में रामराज्य की स्वीकार्यता निश्चित ही साम्यवाद से अधिक होनी थी, और यह हुई भी।

इसी तरह सत्याग्रह को व्यक्तिगत सीमाओं से बाहर निकालकर सार्वजनिक आंदोलन बना देना गांधी के सर्जनात्मक संचारीय चिंतन से ही संभव हो सका। इसके पहले सत्याग्रह का उपयोग प्रायः व्यक्तिगत दायरे और धार्मिक संदर्भों में किया जाता था। गांधी जी इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि सत्याग्रह से जुड़ी धार्मिक अपील लोगों को मोबलाइज कर सकती है। इसलिए उन्होंने एक रणनीति के तौर पर इसे सार्वजनिक स्तर पर अपनाने का फैसला किया। आगे की कहानी एक इतिहास है। सत्याग्रह अन्याय और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ सबसे बड़े प्रतीक के रूप में स्थापित हुआ।

गांधी के व्यक्तित्व में परम्परा और परिवेश को गढ़ने वाले शब्दों के साथ संतुलित प्रयोग करने की अद्भुत क्षमता थी। शब्दों के मूलभाव को बदले बगैर उन्हें नए संदर्भों में प्रयोग कर यथास्थिति को भंग कर देने में गांधी अतुलनीय हैं। परम्परा और परिवेश ने किस

शब्द में कितनी ऊर्जा भरी है और सदियों से संचित शाब्दिक ऊर्जा का उपयोग समसामयिक परिप्रेक्ष्य में कहां हो सकता है, इसको परखने में गांधी बेजोड़ हैं। वह सांस्कृतिक पारिस्थितिकी से परिचय को संचारीय सफलता की पूर्वशर्त मानते थे। शब्दों की आत्मा को संजोते हुए उनका कायांतरण करने की कारीगरी गांधी की सबसे मौलिक विशेषता है। और यही विशेषता उन्हें सहस्राब्दी का सबसे प्रभावी जनसंचारक बना देती है।

सांस्कृतिक-संदर्भों से उनका जुड़ाव केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने अपने व्यक्तित्व को भी इस प्रकार सुगठित किया था कि उसमें सांस्कृतिक प्रतिबद्धताएं झलकती थीं। उनका मन में तो भारतीयता रची-बसी थी ही। मन - वचन - कर्म का सांस्कृतिक संदर्भों के साथ यह समायोजन गांधी को असंदिग्ध विश्वसनीयता प्रदान करता था और साथ ही उनकी लोगों तक पहुंच को असाधारण रूप से बड़ा बना देता था।

वर्तमान संदर्भों में जब संचार और मीडिया प्रत्येक गतिविधि के केन्द्र में आ गई है, तो गांधीवादी संचारीय दृष्टि की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। पश्चिमी चिंतन संचार को तकनीकी और भाषायी परिधि में ही समझने की कोशिश करता रहा है। भारतीय विशेषज्ञ इस चिंतन की छाया में पले-बढे.हैं। सांस्कृतिक संदर्भों में संचारीय-प्रक्रिया को समझने की शुरुआत भी ठीक ढंग से नहीं हो पाई है। सभ्यताओं में टकराव और पहचान के बढ़ते संकट के बीच इस संचारीय प्रक्रिया और सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के बीच संतुलन की जरूरत और भी अधिक बढ़ गई है। इसके उलट संचारीय प्रक्रिया और सांस्कृतिक संदर्भों को एक - दूसरे के आमने - सामने खड़ा कर दिया गया है।

टकराव की इस स्थिति से बाहर निकलना संस्कृति और संचार दोनों की बेहतरी के लिए आवश्यक है। यह काम ज्यादा कठिन भी नहीं है। प्रायोगिक और सैद्धांतिक स्तरों पर संस्कृति और संचार के बीच स्वर्णिम संतुलन साधने का गांधीवादी पाथेय हमारे सामने है ही। ■

(लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय में जनसंचार विभाग में सहायक प्राध्यापक हैं।)

श्रद्धांजलि

पूर्व रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर को अभाविप ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

भारत के पूर्व रक्षा मंत्री सह गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर पर्रिकर के निधन पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। अभाविप के द्वारा जारी वक्तव्य में कहा गया है कि गोवा राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में स्व. मनोहर पर्रिकर राज्य में राजनीतिक स्थिरता स्थापित करते हुए प्रसिद्ध एवं जनप्रिय मुख्यमंत्री रहे। साथ ही वर्तमान सरकार में रक्षा मंत्री के नाते श्री पर्रिकर ने रक्षा मंत्रालय की सौदों से दलालों के वर्चस्व को समाप्त कर भ्रष्टाचार खत्म करने की दिशा में आदर्श उदाहरण पेश किया। अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष एस. सुबैय्या, राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर तथा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मिलिंद मराठे ने श्री पर्रिकर के निधन पर शोक प्रकट किया।

स्व. मनोहर पर्रिकर ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) से तकनीकी स्नातक (बीटेक) की शिक्षा ग्रहण की। अपने अध्ययन काल के दौरान ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आये। अपनी सादगी और वाकपटुता के कारण गोवा सहित पूरे देश में काफी लोकप्रिय नेता बन गये थे। उनके रक्षामंत्रित्व काल के दौरान ही भारत ने पहली बार आतंकवाद के पनागहार पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक किया था। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 62वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पर्रिकर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किये गये थे। ■

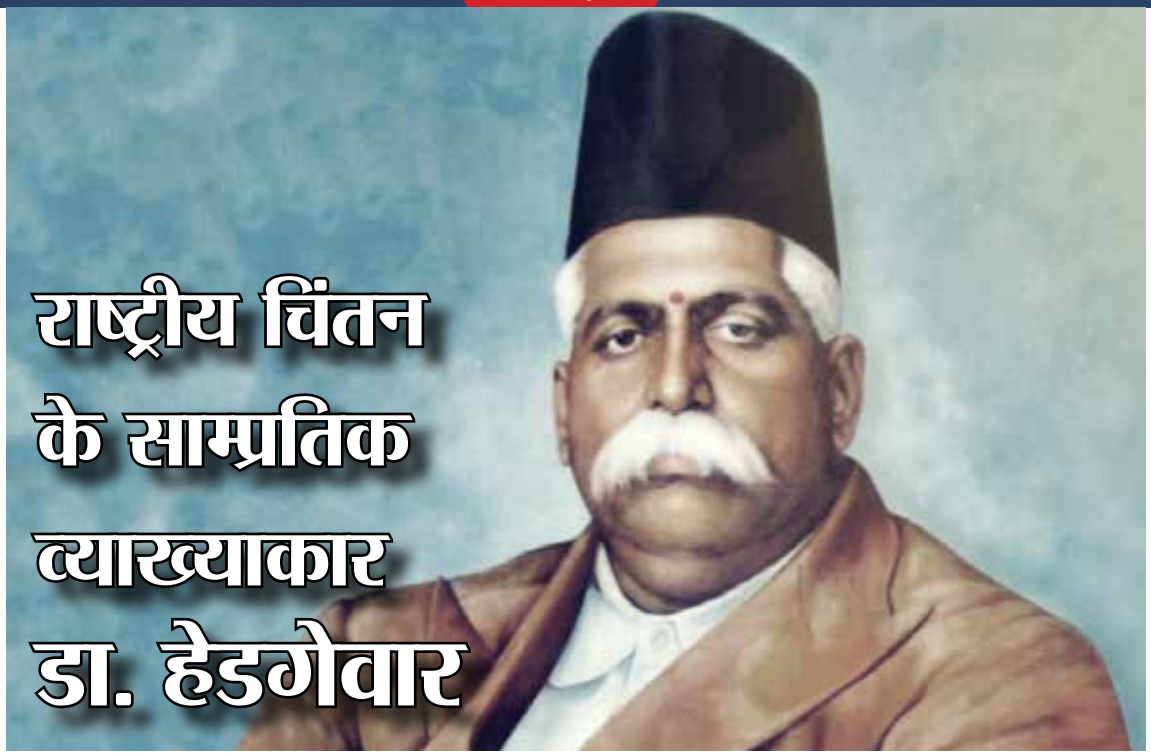

राष्ट्रीय चिंतन के सामयिक व्याख्याकार डा. हेडगेवार

सुशील कुमार

गहराई से विचार करने पर ऐसा लगता है मानो भगवान ने हमारे देश और हमारे हिन्दू समाज पर विशेष उपकार करते हुए केशव को भेजा था- यह भी मानना पड़ेगा कि कालान्तर में पूरे अस्तित्व का ही पोषण हो- ऐसी व्यवस्था बन रही है।

कोई कारण नहीं दिखाई देता कि बिना किसी पारिवारिक पृष्ठभूमि या परिस्थितिजन्य प्रतिक्रिया के एक छोटा प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाला बालक एक विशेष तर्क से मिठाई-- मुफ्त में प्राप्त मिठाई-- को फेंक दे या तमाशा देखने की आयु में उसी तर्क से आतिशबाजी देखने से मना कर दे, साथियों या बड़े भाई के कहने पर भी।

अभी किशोरावस्था में ही थे जब रिश्तेदारी में यवतमाल गए। हम उम्र साथियों को लेकर मालरोड़ पर गिल्ली - डंडा खेलने चले गए, मालरोड़ पर इसलिए कि वह सड़क अंग्रेजों ने अपने लिए आरक्षित कर रखी थी। किशोर केशव का कहना था कि हमारे देश की सड़क अंग्रेजों की कैसे हो गई। अभी खेल प्रारम्भ ही हुआ था कि अंग्रेज साहब बहादुर की सवारी आ गई तो पहले अहलकार ने गिल्ली - डंडे वालों को वहां से हटाने की कोशिश की- अभी कुछ तर्क - वितर्क चल ही रहा था कि सवारी निकट आने पर इन बालकों को साहब बहादुर से सलाम करने को कहा गया तो केशव बोल पड़ेः- 'मैं तो राजधानी नागपुर से आया हूं, वहां बिना जान - पहचान के नमस्ते करने का रिवाज नहीं है, यदि यहां का रिवाज ऐसा हो तो ये साहब बहादुर ही हम लोगों को सलाम करें।'

हाईस्कूल में पढ़ते हुए ही अपने विद्यालय में वन्दे भारतम् आन्दोलन का आयोजन करना, स्कूल से निकाला जाना, अन्यत्र जाकर नए स्कूल में भरती, पर वहां भी स्कूल बंदी। जैसे - तैसे हाईस्कूल पास करना, कलकत्ता जाकर मेडिकल की पढ़ाई, क्रांतिकारी गतिविधि- ये सभी कोई मामूली घटनाएं नहीं है। हाईस्कूल के होते हुए ही विजयादशमी पर उग्र भाषण में अंग्रेजों को रावण का, राक्षस कुल का बताना, इतनी कम उम्र में भी गुप्तचर विभाग की निगाह में आना, सभी बातें मानों ईश्वर द्वारा प्रायोजित थी।

डा. हेडगेवार देखने में अति सामान्य, अन्य साधारण लोगों के समान ही लगते थे। बाबा साहेब आप्टे ने

बताया कि कभी भी उन्होंने अपने बड़प्पन या महानता को हमारे ऊपर प्रगट नहीं होने दिया बल्कि हमेशा वे हमें हमारे बीच के ही लगते थे। न कभी पद या प्रतिष्ठा की चाह, न कभी पैसे के प्रति कोई आकर्षण, स्वयं स्वीकृत दरिद्रता का जीवन, पर स्वाभिमान का जीवन।

कल्पना करें 30-31 वर्ष का युवक नागपुर के कांग्रेस महाधिवेशन के स्वयंसेवक दल का प्रमुख, तिलक जी की असामयिक मृत्यु के कारण अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए महर्षि अरविंद घोष को मनाने के लिए गए डा. मुंजे के साथी, अधिवेशन की विषय समिति के सामने पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव रखने का उपक्रम, यह थे डा. हेडगेवार। कांग्रेस, जो आजादी की लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभा रही थी, वह 9 वर्ष बाद ही पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित कर सकी।

स्वतंत्रता आन्दोलन के हर प्रयास में वे पूरी तरह से सम्मिलित थे। कई बार सभी बातों से सहमत नहीं भी होते थे। उन्हें पहला कारावास एक वर्ष का सश्रम(बाशक्कत) था। उनके किसी भाषण को देशद्रोहपूर्ण ठहराकर उनके खिलाफ मुकदमा चलाया गया। कांग्रेस की नीति थी कि मुकदमे की पैरवी न की जाए- पर डा. केशव ने कोर्ट में अपना बयान देने का निश्चय किया- न्यायधीश का कहना था कि न्यायालय में दिया गया इनका बयान मूल भाषण से कई गुणा उग्र और देशद्रोहितापूर्ण है। एक वर्ष बाद जेल से छूटकर आए तो उनके स्वागत में नागपुर में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया- इस कार्यक्रम में कांग्रेस के शीर्ष नेता उपस्थित होकर डाक्टर जी की महिमा का गुणगान कर रहे थे। नाम ही बताना हो तो हकीम अजमल खां, जवाहरलाल नेहरु के पिता मोतीलाल नेहरु, सरदार बल्लभभाई पटेल के बड़े भाई बिठ्ठलभाई पटेल, डा. अंसारी और राजगोपालाचारी आदि। दूसरी बार भी वे कांग्रेस के ही आन्दोलन में 1931 में जेल गए। यह आन्दोलन था सविनय अवज्ञा आन्दोलन। यद्यपि 1925 में संघ की स्थापना हो चुकी थी ताकि देश के लिए आवश्यक एवं शक्तिशाली समाज की स्थाई व्यवस्था बन सके, तो भी डाक्टर जी ने संघ के अपने दायित्व को किसी दूसरे कार्यकर्ता को सौंपकर सत्याग्रह कर जेल जाने का निश्चय किया। इस बार की जेल यात्रा का लाभ संघ के विस्तार को भी मिला, क्योंकि जेल में अनेक सक्रिय भावनाशील देशभक्तों से डाक्टर जी की मित्रता बन गई। डाक्टर जी की क्रान्तिकारी गतिविधियों की जानकारी मिलना तो अब लगभग असंभव है- क्योंकि वे इतने कुशल थे कि उनकी हर गतिविधि गोपनीय ही रही। पर क्रान्तिकारी, कांग्रेस या फिर संघ की गतिविधियों से उनकी महत्ता को सहज ही समझा जा सकता है। संघ याने एक विचार ही नहीं बल्कि एक अत्यन्त सफल कार्य पद्धति देकर डाक्टर जी ने भगवान के धर्म स्थापना के कार्य की स्थाई व्यवस्था ही की है। बड़ी संख्या में उनकी तरह सोचने वाले लोगों का संच लगातार खड़ा होता रहे- ऐसी अद्भुत व्यवस्था। इतना ही नहीं इस विश्व कल्याण के विचार के लिए, धर्म की स्थापना के लिए संकल्प को लेकर अपने जीवन को होम करने वाले, उनके पद्चिन्हों पर लगातार चलने वाले कार्यकर्ताओं के निर्माण की स्थाई व्यवस्था उनके द्वारा हुई।

स्वतंत्रता आन्दोलन के हर प्रयास में वे पूरी तरह से सम्मिलित थे। कई बार सभी बातों से सहमत नहीं भी होते थे। उन्हें पहला कारावास एक वर्ष का सश्रम(बाशक्कत) था। उनके किसी भाषण को देशद्रोहपूर्ण ठहराकर उनके खिलाफ मुकदमा चलाया गया। कांग्रेस की नीति थी कि मुकदमे की पैरवी न की जाए- पर डा. केशव ने कोर्ट में अपना बयान देने का निश्चय किया- न्यायधीश का कहना था कि न्यायालय में दिया गया इनका बयान मूल भाषण से कई गुणा उग्र और देशद्रोहितापूर्ण है। एक वर्ष बाद जेल से छूटकर आए तो उनके स्वागत में नागपुर में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया- इस कार्यक्रम में कांग्रेस के शीर्ष नेता उपस्थित होकर डाक्टर जी की महिमा का गुणगान कर रहे थे।

हिन्दू जीवन मूल्य विश्व के कल्याण की गारन्टी है- यह तो स्वयं प्रमाणित है- बस इनकी स्थापना के लिए एक देव दुर्लभ कार्यकर्ताओं की टोली चाहिए थी- जिसकी व्यवस्था डाक्टर जी द्वारा स्थापित पद्धति के द्वारा हो रही है। हिन्दू के जागरण से ही विश्व का जागरण संभव है और उसी से विश्व का, मानवता का, संपूर्ण अस्तित्व का कल्याण होगा -हिन्दू जगेगा, विश्व जगेगा..... ■

(लेखक रा. स्व. संघ के वरिष्ठ प्रचारक हैं)

प्रेरक पर्रिकर

| अभिषेक रंजन |

राजनीतिक जीवन में सादगी के प्रतीक और जनप्रिय नेता गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर पर्रिकर का बीतें 17 मार्च को 63 वर्ष की आयु में निधन हो गया। बीमारी के बावजूद अंतिम समय तक गोवा की जनता की सेवा में अनवरत लगे रहने वाले पर्रिकर पिछले एक साल से अग्नाशय के कैंसर से पीड़ित थे, जिसका उपचार अमरीका के साथ-साथ नई दिल्ली स्थित एम्स में चल रहा था । जब केंद्र में भाजपा की सरकार 2014 में बनी तो उनकी इसी खासियत की बदौलत देश के रक्षा मंत्री के रूप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनका चुनाव किया। बतौर रक्षा मंत्री वे 2014 से 2017 तक रहे। इस दौरान वे उत्तर प्रदेश से राज्य सभा के सांसद भी थे।

उरी हमलों के बाद हुए सर्जिकल स्ट्राइक हो या फिर दशकों से लंबित पड़े रक्षा सौदों को अंतिम रूप देने का कठिन कार्य, मनोहर पर्रिकर ने देश की सुरक्षा व्यवस्था को चाक-चौबंद रखने के लिए कार्य करके अपनी एक अलग पहचान बनाई। राजनीतिक परिस्थियों के कारण उन्हें रक्षा मंत्री के रूप में इस्तीफ़ा देना पड़ा जिसके बाद वे चौथी बार 14 मार्च 2017 को गोवा के मुख्यमंत्री बनाए गए थे। इससे पहले भी गोवा के मुख्यमंत्री के तौर वे तीन बार (2000 से 2002, 2002 से 2005 और 2012 से 2014) गोवा की जनता की सेवा कर चुके थे। मनोहर पर्रिकर का जन्म 13 दिसंबर 1955 को गोवा की राजधानी पणजी से क़रीब 13 किलोमीटर दूर मापुसा में हुआ था। मडगांव के लोयला हाई स्कूल से शुरूआती पढ़ाई की, बाद में उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए आईआईटी मुंबई गए, जहाँ उन्होंने 1978 में मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की पढ़ाई पूरी की।

बचपन में ही संघ के संपर्क में आये पर्रिकर की संगठन क्षमता और संघनिष्ठा का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि महज 26 वर्ष की उम्र में वे संघचालक बन गए थे। जब वे गोवा से निकलकर मुंबई पढ़ने गए तो पोवई छात्रावास में संघ के कार्य विस्तार करने में जुटे रहे। पर्रीकर उत्तरी गोवा में राम जन्मभूमि आन्दोलन के दौरान काफी सक्रीय रहे। बाद में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए तथा पहली बार 1994 में विधायक चुने गए। भाजपा के गोवा विधानसभा के लिए चुने गए 4 विधायकों में से वे एक थे। वो किसी भी भारतीय राज्य के विधायक बनने वाले पहले आईआईटी स्नातक थे। 1999 में विपक्ष के नेता बने पर्रिकर महज 6 महीने बाद ही गोवा के मुख्यमंत्री बन गए। दुर्भाग्य से उसी समय उनकी पत्नी का देहावसान हो गया। उनकी पत्नी का निधन भी कैंसर की बीमारी से ही हुआ था।

चप्पल पहने और स्कूटर चलाते हुए सचिवालय से घर जाते समय की तस्वीर....ज़ेहन में पहली बार यही तस्वीर उभरती है जब भी मनोहर पर्रीकर का नाम ध्यान आता है। आज भी इंदौर में आयोजित विद्यार्थी परिषद् के अधिवेशन में उनका दिया भाषण कानों में गूंजता है। अधिवेशन में उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि ईमानदारी नीतियों से नहीं, सिद्धांतों से आती है। नीतियां बदली जा सकती हैं, सिद्धांत नहीं। जब वे ये बात बोल रहे थे तो उनका जीवन स्वयं इसकी गवाही दे रहे थे। आज भले ही वे हमारे बीच नही है, उनका व्यक्तित्व और कृतित्व सदैव युवाओं के लिए प्रेरक रहेगा। विनम्र श्रद्धांजलि! ■

क्या मतदान अनिवार्य होना चाहिए?

किसी भी देश के लोकतंत्र की सार्थकता तभी है जब शत–प्रतिशत मतदान से जनप्रतिनिधि चुने जाएं। दुर्भाग्यवश आज तक देश के किसी भी चुनाव में सौ फीसदी मतदान नहीं हो पाया है। मतदाताओं को घर से मतदान केन्द्र तक ले जाने के लिए निर्वाचन आयोग, सामाजिक संगठन और राजनीतिक पार्टियां लगातार जागरूकता अभियान चला रही है। हरेक नागरिक का कर्तव्य भी बनता है कि वह अपने मत का प्रयोग करे और अपने पसंद के उम्मीदवार को लोकतंत्र की आवाज बनाये। लेकिन लोकतंत्र में नागरिक के पास जहां वोट देने का अधिकार है, वहीं वोट नहीं देने का भी संवैधानिक हक है। पिछले चार – पांच चुनावों का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि हमारे यहां मत–प्रतिशत 35–40 से 65–75 तक रहता है। बताया जाता है कि अभी तक दुनिया के लगभग ढ़ाई दर्जन प्रजातांत्रिक देशों में अनिवार्य मतदान की पद्धति प्रचलन में है। इनमें से डेढ़ दर्जन ही ऐसे देश हैं जहां सभी चुनावों में यह पद्धति अपनाई जाती है। अर्जेंटीना, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, इटली, सिंगापुर, तुर्की और बेल्जियम इन देशों में प्रमुख हैं। बेल्जियम व कुछ अन्य देशों में मतदान न करने पर सजा का भी प्रावधान है। इसके साथ ही कुछ देशों में बुजुर्गों को अनिवार्य रुप से मतदान न करने की छूट मिली हुई है। स्वस्थ लोकतंत्र के निर्माण के लिए आदर्श स्थिति यही है कि हरेक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करे। 2005 में भाजपा के एक सांसद लोकसभा में 'अनिवार्य मतदान' संबंधी विधेयक लाए थे, लेकिन बहुमत नहीं मिलने के कारण विधेयक पारित नहीं हो सका। भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी भी कई बार मतदान को अनिवार्य करने पैरवी कर चुके हैं। लोकसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही एक बार फिर मतदान की अनिवार्यता पर सवाल – जवाब शुरू हो चुका है। 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के सहायक संपादक अजीत कुमार सिंह ने इस मुद्दे को लेकर देश भर के लोगों से विचार मांगे। इस जवाब में किसी ने फोन पर तो किसी ने ईमेल, सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया दी। पेश है कुछ चुनी हुई प्रतिक्रियाएं –

नगर निकाय हो या फिर विधानसभा और लोकसभा चुनाव, सभी में अनिवार्य मतदान का कानून लागू किया जाना चाहिए। अच्छे लोकतंत्र के लिए यह एक बेहतर शुरुआत कही जाएगी। जब सब वोट डालेंगे तो फर्जी वोटिंग भी रुकेगी और अच्छे जनप्रतिनिधि सामने आएंगे।

- **वेंकटेश रेड्डी** (विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

मतदान की अनिवार्यता भारत जैसे विशाल देश में व्यावहारिक नहीं है और न ही ये मतदान के मूल संकल्पना को पूर्ण करेगा। ज्यादा से ज्यादा मतदान सुनिश्चित करने के लिए जन जागरण के साथ सुविधाओं का विस्तार और 'जहां मतदाता - वहां मतदान' की मांग पूरा करना पड़ेगा। ऐसा करने पर मतदान निश्चित ही बढ़ेगा।

- **निकिता बिजू** (अरूणाचल प्रदेश)

मतदान करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है और निश्चित रूप से आम जनमानस को इस जिम्मेदारी का निर्वहन करना चाहिए। जिस प्रकार हम सभी अपने पारिवारिक दायित्वों का पालन करते हैं उसी प्रकार मतदान भी सुनिश्चित करें। भारत एक युवा देश है यहां पर युवा मतदाता की संख्या ज्यादा है इसलिए लोकतंत्र के महापर्व पर हम सभी युवाओं की भूमिका अति प्रासंगिक है, हमें नवीन भारत के निर्माण के लिए, भ्रष्टाचार मुक्त समाज निर्माण के लिए पूर्ण मतदान सुनिश्चित करना होगा।

- **राजीव रंजन** (जमशेदपुर टाटा, झारखंड)

लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए मतदान अनिवार्य होना ही चाहिए। समाज का जो हिस्सा मतदान नहीं करता है वह अपने कर्तव्य से विमुख हो जाता है। अगर मतदान की अनिवार्यता होगी तो इससे लोकतंत्र मजबूत होगा जिससे लोकतंत्र में लोक मजबूत होगा।

- **शुभम तिवारी** (बलिया, उत्तर प्रदेश)

विविधताओं से भरा सवा करोड़ से अधिक जनसंख्या वाले देश भारत में मतदान को अनिवार्य करना बिल्कुल अव्यावहारिक होगा। आजीविका की तलाश में लोगों को अपने गांव से मीलों दूर महानगरों में जाना पड़ता है खासकर असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को। मतदान करने के लिए उसे ससमय छुट्टी मिलना संभव नहीं हो पायेगा अगर मिल भी गया तो घर जाने में हजारों रूपये खर्च होंगे और मजदूरी कटेगी सो अलग, इस स्थिति में मतदान को अनिवार्य करना उसके मूल अधिकार को छिनने के समान है। इसलिए मतदान को अनिवार्य करने के बजाय मत प्रतिशत को बढ़ाने के लिए मतदान केन्द्र और घर की दूरी को कम करने, लोगो में जागरूकता लाने पर जोर देना चाहिए। जब लोग जागरूक होंगे तो स्वयं अपने मत का प्रयोग करेंगे।

- **सौम्या नागवंशी** (छात्रा, दिल्ली विश्वविद्यालय)

परिषद् गतिविधियां

ऊधमपुर (जम्मू – कश्मीर) : बलिदान दिवस पर दीप प्रज्ज्वलित कर बलिदानियों को किया याद

दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में उभरता भारत – नई दिशाएं संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मिलिंद मराठे, अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री निधि त्रिपाठी, राष्ट्रीय सह – संगठन मंत्री श्रीनिवास, डूसू संयुक्त सचिव ज्योति चौधरी, अध्यक्ष शक्ति सिंह व अन्य

RNI No.: DELBIL/2017/73636
Date of Posting: 10-11 April, 2019
Date of Publishing: 8 April, 2019

Postal Regd. No.: DL(C)-11/1409/2017-2019
Post Office: NDGPO, New Delhi